मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ जनवरी २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०१

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का त्रयोदश अधिवेशन संपन्न।

त्रयोदश अधिवेशन का दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते हुए मेघालय के राज्यपाल रंजित शेखर मुसाहारी एवं असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई साथ दे रहे हैं– डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका, श्री रंग बंग तेरंग, सभापति असम साहित्य सभा एवं श्री नन्दलाल रुँगटा, सम्मेलन सभापति।

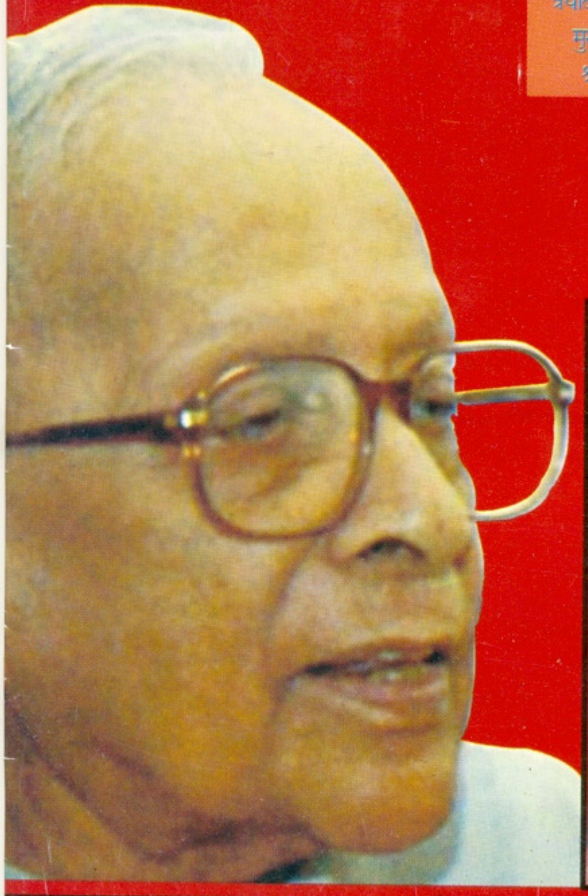

श्रद्धांजलि:

ज्योति बाबू को लाल सलाम।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

◆ जनवरी २०१० ◆ वर्ष ६० ◆ अंक –१ ◆ एक प्रति–१० रु. ◆ वार्षिक–१०० रु.

1935-2010

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
बंग प्रदेश वन्दना – बाबूलाल धनानिया	५
अपनी बात :	६
अध्यक्षीय :	७
चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक	८
जंतर–मंतर :	
बड़े दिल के इन्सान थे ज्योति बसु – सीताराम शर्मा	९–१०
पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का त्रयोदश अधिवेशन सम्पन्न	११–१३
मुझे गर्व है कि मैं सम्मेलन का हिस्सा हूँ – रामअवतार पोद्दार	१५
खुश रहने की कला कुछ अनुभव – डॉ. सुनीता अग्रवाल	१७–१८
गौरीशंकर डालमिया पर भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी	१९
सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्यों की सूची	२१–२१
सम्मेलन के नये आजीवन एवं विशिष्ठ सदस्यों की सूची	२३
मातृभाषा एवं समाज से विरक्ति चिंता का विषय – हनुमान सरावगी	२४
अलगाववाद बनाम राष्ट्रवाद – रमेश कुमार बंग	२५
राजस्थानी साहित्य में विरह–वेदना – ओंकार पारीक	२७
बदलावमुखी मारवाड़ी समाज – किशोर कुमार जैन	२८
मारवाड़ी सम्मेलन और असम साहित्य सभा – गोपाल जालान	२९–३०
कविता : भीड़ में कोई आदमी नहीं था – बनेचन्द मालू	३०
युगपथ चरण :	
रंग रंगीलो राजस्थान महोत्सव सम्पन्न	३१
राज्यपाल ने दी विद्यार्थियों को नेक सलाह	३१
समाज को सेवाएं देने वाली विभूतियां सम्मानित	३२–३३
श्री अग्रसेन स्मृति भवन: मेधावी अग्रवाल छात्र–छात्राओं को सम्मानित	३४
प.बंगीय मा. सम्मेलन शिक्षा कोष: छात्र–छात्राओं में परिधान का वितरण	३४
रामेश्वर टांटिया के १००वें जन्म दिवस	३५
राजेंद्र जैन सम्मानित	३५
भामाशाह स्मारक समिति: दसवें भामाशाह सेवा सम्मान समारोह	३६
रामगढ़: अभिनन्दन समारोह	३६
मारवाड़ी महिला मंच: लखीमपुर	३७
श्रद्धांजलिः	
लाल सलाम : ज्योति बाबू को	३८

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ◆ email: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

◆ संपादक : नंदकिशोर जालान ◆ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

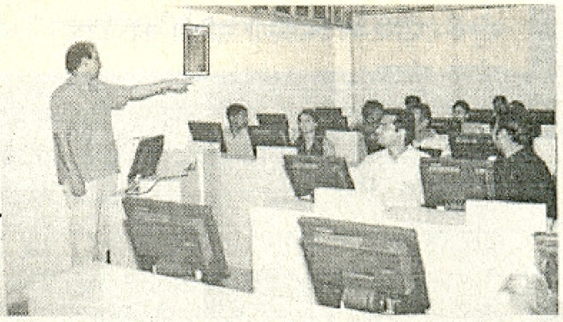

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106
Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379
E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

चिट्ठी आई है :

बाबूलाल धनानिया

बंग प्रदेश वन्दना

शस्य श्यामला बंग भूमि को शत शत मेरा नमन।
सच्चे सादे लोग यहां हैं, भाई चारा, प्रेम भरा है।।
शिक्षा का विस्तार यहां है, शान्ति निकेतन स्थान यहां है।
गंगा सागर पुण्य भूमि को शत शत मेरा नमन।।
चावल की खेती होती है, घर-घर में वीणा बजती है।
भक्ति की गंगा बहती है, मेट्रो रेल यहां चलती है।
काली मंदिर की देवी को शत शत मेरा नमन।।
दीघा जैसी जगह यहां है, हावड़ा ब्रिज की शान यहां है।
रसगुल्लों में स्वाद यहां है, ऐसी सुविधा और कहां है।
कंचनजंघा के शिखरों को शत शत मेरा नमन।।
दुर्गापूजा का मान यहां है, बाबा तारकेश्वर धाम यहां है।
मायापुरी की शान यहां है, चैतन्य का गुण-गान यहां है।
परमहंस जैसे संतों को शत शत मेरा नमन।।
क्रांति की ज्वाला जलती थी, जवानियां फांसी चढती थी।
वन्देमातरम् गान यहीं था खुदीराम बलिदान यहीं था।।
सुभाष जैसे नेताजी को शत शत मेरा नमन।
शस्य श्यामला बंग भूमि को शत शत मेरा नमन।।

बाबूलाल धनानिया,
इ.सी.–२६२, साल्टलेक, कोलकाता– ७०००९१

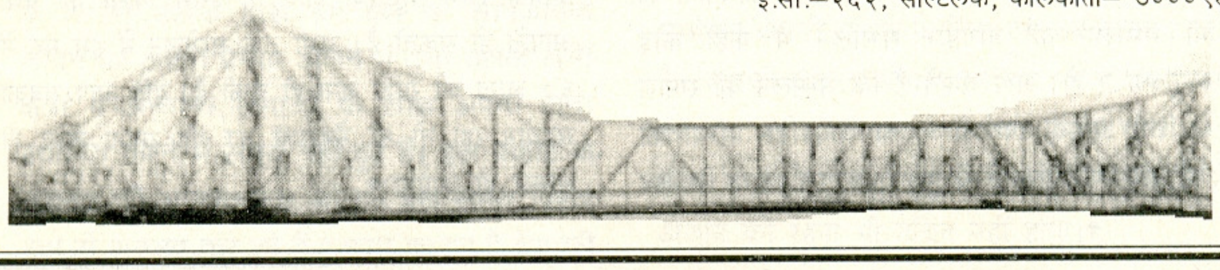

अपनी बात :

रुँगटा जी के साथ एक यात्रा

- शंभु चौधरी

पिछले दिनों मुझे असम यात्रा का अवसर एक लम्बे अर्से के बाद मिला। श्रद्धेय श्री रुँगटा जी की इच्छा थी कि उनके साथ मैं भी असम चलूँ। असम प्रदेश का प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अवसर था। साथ ही सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारणी सभा। सुबह श्री रामअवतार जी पोद्दार का फोन आया कि विमान एक घंटा विलम्ब से है एवं श्री आत्माराम सोंथलिया जी एयरपोर्ट पहुँच गए हैं, हमें भी निकलना चाहिए। उनकी गाड़ी मेरे घर पर आ गयी। हम लोग लगभग १०.३० बजे दमदम एयरपोर्ट (कोलकाता) पहुँच गए। अन्दर जाने पर पता चला कि विमान लगभग तीन घंटा विलम्ब से उड़ान भरेगा। कारण कि जयपुर एयरपोर्ट पर काफी घना कोहरा होने के चलते विमान उड़ान लेने में विलम्ब कर रहा है। हम श्री रुँगटा जी, रामअवतार जी, सोंथालिया जी श्री संजय हरलालका एवं श्री श्यामलाल डोकानिया आपस में बात चित कर समय काटने लगे। इस अवसर पर मुझे श्री रुँगटा जी के साथ रहने का एक लम्बा अवसर मिला। जो व्यक्ति सम्मेलन को जन्म से ही अपने घर में देखता–सुनता आ रहा हो ऐसे व्यक्तित्व का सम्मेलन सभापति पद पर आना सम्मेलन के लिए सौभाग्य की बात है। आपके पिता श्री स्व.सीताराम जी रुँगटा भी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रह चुके हैं। आपका बाल–जीवन सम्मेलन की गतिविधियों के बीच ही गुजरा। जब इनसे बातें होने लगी तो आपने अपने मन की कई योजनाओं को मूर्त रूप देने की बात दोहराई जिसमें से एक योजना सम्मेलन के एक करोड़ के फण्ड को लेकर है। आप चाहते हैं कि सम्मेलन के पास एक ऐसा फण्ड हो जिससे साधारण कार्यकर्ता को भी सम्मेलन की बागडोर संभालने में कहीं कोई असुविधा न हो। आप चाहते हैं कि सम्मेलन को समाज के लिए अधिक उपयोगी बनाया जाए। इस संस्था की जड़ें गाँव–गाँव तक फैली हुई हैं। आपने बताया कि जब आप बिहार–प्रान्त के अध्यक्ष थे किस प्रकार गाँव–गाँव की यात्रा करते थे। उस समय समाज का विश्वास सम्मेलन के पदाधिकारियों के प्रति देखते ही बनता था। इन कल्पनाओं को अपने कार्यकाल में साकार करने की दिशा में श्री रुँगटा जी को बढ़ते इनके आत्मविश्वास को देखते हुए यह बात अंकित करने का मन मैंने उसी समय बना लिया था। साधारणत: मैं अपनी कलम से किसी व्यक्ति विशेष की बात लिखने में सदा परहेज किया करता हूँ परन्तु जब किसी अध्यक्ष के मुख से सम्मेलन के भविष्य की बात सुनने का अवसर मिले तो उसे लिखना जरूरी हो जाता है।

हम लोग शाम चार बजे गुवाहाटी पहुँचे। असम के कई पदाधिकारियों ने शानदार स्वागत किया। शाम को ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा की बैठक स्थानिय माहेश्वरी भवन में सम्पन्न हुई। इस समय उड़ीसा के एक सदस्य ने यह प्रश्न भी उठाया कि हमारा राज्य काफी गरीब राज्यों में आता है। वहाँ का समाज १०० रुपये की फीस भी देने में संकोच करता है। वह कैसे ५००० रुपया या ५१००० रुपया का सदस्य बन सकता है? यह बात सही है कि हमारा समाज मध्यम श्रेणी का समाज है। इसी बात की चिन्ता श्री रुँगटा जी को भी है। वे जानते हैं कि समाज के लिए इतनी बड़ी राशि एवं वह भी एकमुस्त देना संभव नहीं हो सकता। लेकिन वे ये भी जानते हैं कि समाज का एक बड़ा तबका इस राशि को वहन कर सकता है। जो तबका इस राशि को देने में सक्षम है उनसे सहयोग लेकर समाज के बड़े वर्ग को यदि अधिक से अधिक लाभ पहुँचाया जाए तो इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। अभी तक सम्मेलन में इस मद में ६० लाख की राशि जमा हो चुकी है। यदि आप सबका सहयोग रहा तो श्री रुँगटाजी का यह सपना जल्द ही साकार हो जाएगा।◆

अध्यक्षीय :

सम्मेलन की सोच व्यापक है।

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सन् १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का जन्म हुआ। इस सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन का सनातनीदल के प्रमुख नेता स्व. रामदेव चोखानी ने सभापतित्व किया। सम्मेलन ने मारवाड़ी शब्द के अन्तर्गत आनेवाली सभी जातियों को इसमें सम्मिलित कर पहला अधिवेशन दिसम्बर सन् १९३५ में कोलकाता के मुहम्मद अली पार्क में किया। इस अवसर पर प्रथम सभापति की हैसियत से स्व. रायबहादुर रामदेव जी चोखानी ने जो भाषण दिया उसके निम्न अंश ध्यान देने लायक हैं:–

> **सम्मेलन की सोच संकीर्णता के दायरे से हट कर समाज के लिए है। सम्मेलन जाति, समुदायों के बन्धन से परे है। इसकी सोच बहुत व्यापक है जो समस्त समाज के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रीत है तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करती है। सम्मेलन प्रवासी समाज के लिए एक अग्निशामक दल है।**

"जिस महान एवं पवित्र उद्देश्य को लेकर हम लोग यहाँ उपस्थित हुए हैं वह उद्देश्य है सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज का सामूहिक संगठन, ऐसा संगठन जो जाति में नवजीवन का संचार करने वाला हो, उसके कार्यकर्त्ताओं में उल्लास, सजीवता एवं कर्मोद्दम का भाव भरने वाला हो और जिसमें समाज की विभिन्न शाखाएँ सम्बद्ध हों अपने जातीय हित और उससे भी वृहत्तर सम्पूर्ण देश से स्वार्थ सम्बन्ध रखने वाले समस्त प्रश्नों पर विचार कर अपना कर्त्तव्य स्थिर करें। अभी तक समाज की विभिन्न शाखाओं का जो संगठन हुआ है, शृंखलित न होने के कारण उसके द्वारा हम देश के सार्वजनिक जीवन पर अपना प्रभाव डालने में तथा उसके सभी क्षेत्रों में अन्यान्य समाजों के साथ अपनी सत्ता स्थापित करने में समर्थ नहीं हुए हैं। इस प्रकार के संगठन की आवश्यकता जो हम इस समय विशेष रूप से अनुभव कर रहे हैं इसका कारण है देश की परिस्थिति में परिवर्तन। आज समाज के वृद्ध एवं युवक दल में, सनातनी और सुधारक में जो इतना पार्थक्य दीख पड़ रहा है और दोनों एक दूसरे को कोसों दूर समझते हैं, उसका कारण भ्रम ही है। यह भ्रम दोनों का ही एक समान शत्रु है।"

आज ७५ वर्षों के पश्चात भी समाज को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। आज हम जहाँ जातें हैं वहीं हर समाज जातीय आधार पर अपना अलग–अलग संगठन बनाते जा रहा है। अग्रवाल समाज, माहेश्वरी सभा, खण्डेलवाल परिषद, जैन महासभा जैसे साथ ही कई उपजातीय संगठन भी इन दिनों प्रकाश में आये हैं। किसी को ऐसी संस्थाओं के गठन पर कहीं एतराज नहीं है पर जब समाज स्वयं में सिमटता जाए तो इस पर हमें विचार तो करना ही चाहिए, विशेषकर जब आपस में इन संगठनों में कोई सामंजस्य नहीं दिखता है।

सम्मेलन की सोच संकीर्णता के दायरे से हट कर समाज के लिए है। सम्मेलन जाति, समुदायों के बन्धनों से परे है। इसकी सोच बहुत व्यापक है जो समस्त समाज के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित है तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करती है। सम्मेलन प्रवासी समाज के लिए एक अग्निशामक दल है। जिसकी जरूरत समाज को कब पड़ेगी यह किसी को पता नहीं। संभवत: आज की हमारी सोच कभी काम न आये, परन्तु समाज को ऐसी परिस्थिति से अंजान बने रहना भी उचित नहीं होगा।◆

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक

शनिवार ९ जनवरी २०१०

माहेश्वरी भवन, गुवाहाटी, असम में

चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा के साथ पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारीगण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वर्तमान सत्र की चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक शनिवार ९ जनवरी २०१० को माहेश्वरी भवन, गुवाहाटी, असम में पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में अध्यक्ष ने कहा कि कोई भी संस्था मनुष्य से बड़ी होती है। इसलिए संगठन को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना जरुरी है जिससे कि संस्था इस मामले में किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर न रहे। इसके लिए आपने अधिकाधिक लोगों से संरक्षक, आजीवन व विशिष्ट सदस्य बनने का अनुरोध किया। सम्मेलन की सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने हेतु आपने समाज हर वर्ग से सदस्य बनने और बनाने का भी अनुरोध किया। आपने कहा कि सम्मेलन ही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसमें उपजाति बोलकर कुछ नहीं है। मारवाड़ी यानि मारवाड़ी। आपने सदस्यों को बताया कि सम्मेलन के सदस्यों की डायरेक्टरी ३१ मार्च २०१० तक प्रकाशित करने का प्रयास है। कौस्तुभ जयन्ती के सम्बन्ध में आपने बताया कि इसकी शुरुआत २५ दिसम्बर २००९ कोलकाता के विद्या मन्दिर सभागार में बिड़ला दम्पत्ति द्वारा उद्घाटन किये जाने के साथ–साथ हो चुकी है।

अध्यक्ष ने जगह–जगह परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक विवाह आयोजित करने पर बल देते हुए कहा कि यह समय की मांग है। समाज के बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने के सम्बन्ध में आपने कहा कि मेधावी बच्चों को सहायता दिलाने में सम्मेलन सहयोगी की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। आपने प्रत्येक प्रान्तों व शाखाओं से अनुरोध किया कि वे समाज विकास में प्रकाशन हेतु प्रत्येक माह की १५–१६ तारीख तक अपने कार्यों की रपट जरुर भेजें।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने बताया कि गत् वर्ष १२० संरक्षक, १०९ आजीवन तथा १३० विशिष्ट सदस्य बने हैं। जिससे प्राप्त राशि को फिक्स डिपोजिट करा दिया गया है। आपने बताया कि सम्मेलन के ७४वें स्थापना दिवस पर पधारे बिड़ला दम्पत्ति ने सम्मेलन को ११ लाख रुपये अनुदान देने की घोषणा की है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने बताया कि सम्मेलन की आर्थिक स्थिति में और सुधार की जरुरत है जो सबके सहयोग से ही संभव है।

बैठक में उपस्थित सदस्यों के संविधान संशोधन, एकल सदस्यता, राष्ट्रीय मुद्दे से सम्बन्धित प्रश्नों का जवाब देते हुए अध्यक्ष ने कहा कि हमारे पास मुद्दे हर समय रहे हैं। तलाक, फिजूलखर्ची, आडम्बर, विवाह समारोह में सड़कों पर नाच, मदिरापान जैसे अनेक राष्ट्रीय मुद्दे हैं। परिवारों में भाई–भाई, बाप–बेटा, पति–पत्नी के बीच मनमुटाव हो रहा है। पारिवारिक एकता का ज्वलन्त मुद्दा हमारे सामने है। वृद्धाश्रम का मुद्दा है। क्यों हम अपने वृद्ध माता–पिता को वृद्धाश्रम भेज रहे हैं या वे जा रहे हैं? आज के समयानुसार हमारे बच्चे आईपीएस बनें, सरकारी उच्च पदों पर कैसे जायें, इस पर हमें सोचना है। इसके अलावा राजनीति में भी हमारे समाज की भागीदारी कैसे बढ़े, हमारे समाज के लोग राजनीति में आयें और अपना वर्चस्व बनाएं, इस दिशा में हमें लोगों को प्रेरित करना है। हमारे पास मुद्दे बहुत हैं लेकिन आज जरुरत है उन पर अमल करने की।◆

जंतर-मंतर :

बड़े दिल के इन्सान थे ज्योति बसु

- सीताराम शर्मा

जन आन्दोलनों एवं विशाल जनसभाओं में उनके तेज–तर्रार एवं क्रान्तिकारी भाषणों पर आधारित छवि से सर्वथा विपरीत ज्योति बसु एक बहुत ही विनम्र, मृदुभाषी एवं सर्वोपरि एक बड़े दिल के इन्सान थे। जिन्हें उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ वे इस ज्योति बाबू की राजनीति से ऊपर उठकर सीधी–सपाट एवं व्यावहारिक बातों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे।

विधानसभा में श्रद्धांजलि दते हुए श्री सीताराम शर्मा

यूँ तो मुझे उनसे १९६७–६९ में एक–दो बार प्रतिनि–धिमंडलों में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ लेकिन १९७७ के बाद से हाल तक दर्जनों बार औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से व्यक्तिगत रूप से मिलता रहा। पहली याद १९७७ की है। जब वाममोर्चा एक बड़ी जीत के साथ सरकार में आया था। मैं अंग्रेजी साप्ताहिक कैलडस्ट का सम्पादक था। चुनाव नतीजे के बाद मेरी कवर स्टोरी का शीर्षक था बंगाल गोज रेड कुछ दिनों बाद मुख्यमंत्री के साथ राईटर्स बिल्डिग में एक मुलाकात के दौरान अचानक ज्योति बाबू ने पूछा आप कैलडस्ट निकालते हैं, आपकी कवर स्टोरी का शीर्षक बहुत अच्छा था। (आपनी कैलडस्ट बार कोरेन, आपनार कवर स्टोरीर हेडिंग भालो छिलो) । मैं आश्चर्यचकित एवं अभिभूत रह गया। एक छोटे समाचार को याद रखना एवं उसकी प्रशंसा करना, उनका बड़प्पन दर्शाता था।

१९९४ की बात है पश्चिम बंग संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के तत्वावधान में विधानसभा में एक पश्चिम बंगाल में औद्योगिक–अवसर एवं चुनौतियां विषयक दो दिवसीय गोष्ठी का मैं आयोजक था। मुख्यमंत्री ने उद्घाटन हेतु स्वीकृति प्रदान कर दी थी। गोष्ठी का आयोजन राज्य सरकार के उद्योग विभाग के सहयोग से किया जा रहा था। विभाग के वरिष्ठ अधिकारी चाहते थे कि मुख्य वक्ता के रूप में एक ऐसे उद्योगपति को आमंत्रित किया जाये जो सरकार के पक्ष की बात रखे। मुझे कहलवाया गया कि मुख्यमंत्री इससे खुश होंगे। अधिकारियों ने जो नाम सुझाये मेरी समझ में वे चुनौतियों पर खुलकर बात नहीं रख पाते। मेरा दिल नहीं मान रहा था। मैंने फिक्की के तात्कालिक अध्यक्ष अजय रुँगटा को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया। अजय जी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए मुझसे पूछा कि मेरे विचारों को जानते हुए भी आप मुख्यमंत्री की उपस्थिति में इस सरकार के सहयोग से आयोजित गोष्ठी में बुलाना चाहते हैं। कार्यक्रम में जब मैंने मुख्यमंत्री से अजयजी का परिचय कराया तो ज्योति बाबू ने बड़ी आत्मीयता एवं सहजता से कहा, "आमि तो उनार फेमिली के चिन्ही, भालो लोग" (मैं तो इनके परिवार को जानता हूं, अच्छे लोग हैं) ज्योति बाबू का दिल बहुत बड़ा था।

जब कभी मैं उनसे मिलता था तो दो बातें मुझे देखते ही अवश्य कहते थे। "आपनार युनाइटेड नेशन्सेर की खबर, आमादेर स्पीकर के संगे रेखेचेन।" (आपके संयुक्त राष्ट्र संघ का क्या हाल है, हमारे विधानसभा अध्यक्ष को

अपने साथ रखे हैं)। १९९५ में राष्ट्र संघ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैंने ज्योति बाबू से एक राज्य स्तरीय संयुक्त राष्ट्र स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति बनाने का अनुरोध किया। कुछ दिनों बाद, तत्कालीन मुख्य सचिव एन. कृष्णमूर्ति ने मुझे मिलने के लिए बुलाया और कहा मुख्यमंत्री ने आवश्यक आदेश जारी कर दिये हैं एवं कमिटि के सदस्यों के लिए आपसे राय लेने के लिए कहा है। मैंने ३० सदस्यों के नाम प्रस्तावित किये जिसमें बुद्धदेव बाबू सहित कई मंत्री, विभिन्न विभागों के सचिव, विश्वविद्यालयों के उपाचार्य आदि थे।

चूंकि मुझसे सूची मांगी गयी थी इसलिए मैंने मेरा नाम प्रस्तावित करना उचित नहीं समझा। सभी प्रस्तावित नामों के मुख्यमंत्री अनुमोदन के साथ तत्काल एक वर्ष व्यापी समिति के गठन के लिए सरकारी आदेश जारी हो गया, न केवल मेरा नाम शामिल था बल्कि मुझें बैठकें आयोजित करने एवं कार्यक्रम तैयार करने का भी भार दिया गया था।

इस संदर्भ में एक और घटना याद आती है ईराक हमले के कुछ दिन बाद मैं एक विदेशी प्रतिनिधि मंडल के साथ मिलने ज्योति बाबू के पास गया था। देखते ही देखते उन्होंने कहा "एटा आपनार युनाईटेड नेशन्स जन्ये भालो होलो ना, बड़ी क्षति होबे" (यह आपके युनाईटेड नेशसन्स के लिए अच्छा नहीं हुआ, इससे बड़ा नुकसान होगा)। यह उनकी दूरदर्शिता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की समझ का परिचायक था।

संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बन्धित कई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में राज्य के मंत्रियों को प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित करने का अवसर आया। प्रोटोकाल के अनुसार, राज्य के मंत्रियों– अधिकारियों की विदेश यात्रा के लिए मुख्यमंत्री की स्वीकृति आवश्यक है। जब भी ऐसा अवसर आया, ज्योति बाबू के बड़े दिल को देखने एवं अनुभव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे आमंत्रित मंत्री से कहते थे "भालो कोरे घूरे आसुन अनेक किछु नूतन सीखबार आछे। आर आमरा जे नूतन कोरची सेटा ओखाने बोलबेन, कोनो असुविधा होले बोलबेन।" (अच्छे से घुम कर आइये, बहुत कुछ नया सीखने के लिए है और हम लोग जो कुछ नया कर रहे हैं उसके विषय में वहां बतायें)।

श्री हाशिम अब्दुल हालिम जब लगातार पांचवी बार विधानसभा अध्यक्ष निर्वाचित हुए तो मैंने इस ऐतिहासिक अवसर पर उनके सम्मान में समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया। समारोह में आमंत्रित करने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बाबू के पास उनके निवास स्थान गया। ज्योति बाबू ने कहा– आमार शरीर खूब भालो नहीं। हाशिम भालो काज करचे। आमि जाबो। कबो जेते होबे (मेरी तबीयत बहुत ठीक नहीं है, हाशिम अच्छा काम कर रहे हैं, मैं जाऊँगा। कब जाना होगा)। ८ जुलाई २००१ की तारीख तय की। राज्यपाल वीरेन शाह ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी। कार्यक्रम के २ दिन पहले हमें अहसास हुआ कि संयोगवश उसी दिन ज्योति बाबू का ८८वां जन्म दिन है। मैंने ज्योति बाबू के सचिव जयकृष्ण घोष से बात की कि हम उनका भी सम्मान करना चाहेंगे। जयदा ने कहा ज्योति बाबू को कुछ कहेंगे तो वे मना कर देंगे जो करना है चुपचाप कर लें।

ज्योति बाबू जब समारोह में पधारे तो मैंने कार्यक्रम के आरंभ में ही उनसे इस विषय में कहा तो वे बोले – "एई डेट टा कि आपनी ऐटा भेभे ठीक कोरे छिलेन। आमी तो एई सब मानी ना, सुभाष सकाले किछु छेल–मेये के निये आमार बाड़ी ते आसे, आमी कि करबो, आपनी आमाके हाशिमेर सम्बर्द्धना जन्ये डेके चेन" (मैं तो यह सब नहीं मानता, सुभाष कुछ लड़के–लड़कियों को लेकर मेरे घर पर आते हैं। मैं क्या करुँ आपने मुझे हाशिम के सम्मान समारोह में बुलाया है)। वे एकदम मना करते इसके पहले मैंने कहा सिर्फ एक फूल का गुलदस्ता आपको भेंट करेंगे। हमने ८८ गुलाब के फूलों का एक भव्य गुलदस्ता उन्हें भेंट किया। गुलदस्ता ग्रहण करते हुए मेरी और मुखातिब होकर उन्होंने कहा कि "आपनी सब आगे थेके ठीक कोरे रेखेचेन" (आपने पहले सही सब ठीक कर रखा था)। उनके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी।

एक बार मैं पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामनिवास मिर्धा को लेकर जून २००४ में ज्योति बाबू से मिलने उनके इन्दिरा भवन निवास स्थान पर गया। ज्योति बाबू लुंगी पहने बहुत ही अनौपचारिक एवं बड़े खुशनुमा मिजाज में थे। मिर्धाजी से उन्होंने कहा कांग्रेस को राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। उन्होंने देश में बढ़ती साम्प्रदायिक हिंसा पर चिन्ता व्यक्त की एवं मिलीजुली सरकार की अनिवार्यता की बात कही। इसी बीच लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी वहां पहुँच गये। सोमनाथ बाबू, मिर्धा जी एवं मैं छात्रों की तरह ज्योतिबाबू की बातें सुन रहे थे। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में एक ९० वर्षीय राजनेता के दलीय राजनीति से ऊपर उठकर व्यवहारिक, यथार्थवादी एवं सुलझी हुई सोच एवं विचारों ने ही उन्हें भारतीय राजनीति से एक ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व का दर्जा दिया है जिसका कोई सानी नहीं है।◆

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन का त्रयोदश अधिवेशन

सर्वांगीण विकास हमारी प्राथमिकता

- नन्दलाल रुँगटा

बायें से दायें – श्री कैलाश लोहिया, शाखा अध्यक्ष, श्री रामअवतारजी पोद्दार,राष्ट्रीय महामंत्री, श्री माणिकचन्दजी जालान, स्वागताध्यक्ष, श्री तरुण गोगोई, मुख्यमंत्री – असम, श्री आर.एस. मुसाहारी,राज्यपाल–मेघालय, डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रंग बंग तेरंग, सभापति असम साहित्य सभा एवं श्री नन्दलाल रुँगटा सम्मेलन सभापति –अ.भा.मा.सम्मेलन।

गुवाहाटी। मारवाड़ी समाज पूरे देश में मेहनतकश और कर्मठता की वजह से जाना जाता रहा है। अतीत में समाज के लोग काफी मेहनती थे, फलस्वरूप देश के दूसरे हिस्से के साथ–साथ असम के विकास में भी इस समाज का योगदान रहा है। ये बातें असम के **मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई** ने १० जनवरी को श्री गौहाटी गौशाला परिसर में आयोजित पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के त्रयोदश प्रादेशिक अधिवेशन के समारोह में विशिष्ट अतिथि रूप में कही। साहित्य के क्षेत्र में ज्योतिप्रसाद अग्रवाल एवं उन के परिवार के अन्य सदस्यों के योगदान की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि और दूसरा ज्योति प्रसाद इस समाज में पैदा नहीं हुआ, जिसकी आज बड़ी आवश्यकता है। मारवाड़ी समाज के कठिन परिस्थितियों में रहकर जीवन–यापन करने के साथ–साथ सामाजिक विकास के अलावा स्थानीय विकास पर भी ध्यान दिया जाना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। समाज की खासियत है कि वह जहां भी गया, वहां की भाषा–बोली और संस्कृति को अपनाया है। इसके पूर्व **मेघालय के राज्यपाल रंजित शेखर मुसाहारी** ने चेतना पर्व का दीप प्रज्वलित कर समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री मुसाहारी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में संघर्षपूर्ण जीवन जीने और विषम परिस्थितियों में रहकर उद्योग–व्यापार स्थापित करने को साहस भरा कार्य बताया। विशेष रूप से मेघालय जैसी विषम भौगोलिक परिस्थिति और पहाड़ी क्षेत्रोंवाले स्थान पर २०० साल पहले जब मारवाड़ी आये, तब यह क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ था। लेकिन मारवाड़ी समाज ने यहां रहकर छोटे–छोटे उद्योगधंधे स्थापित किये और क्षेत्र का चहुमुखी विकास किया। श्रीमद्भागवत गीता का गहराई से अध्ययन करने वाले मेघालय के राज्यपाल ने वर्ण व्यवस्था को एक सामाजिक अभिशाप बताया और कहा कि इससे पूरा देश और समाज प्रभावित है। उन्होनें कहा कि भगवान कृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि हिन्दु धर्म में समाज को चार वर्ण में व्यवस्था में उनके कर्म के आधार पर विभाजित किया था, परन्तु हमने अपनी सुविधानुसार इसका अलग अर्थ निकाल लिया और समाज को ब्राह्मण, क्षेत्रीय, वैश्य और क्षुद्र जाति में बांट लिया। यह प्रथा समाज और राष्ट्र के विकास में बहुत बड़ी बाधा है, जिसका उन्मूलन किया जाना आवश्यक है।

असम साहित्य सभा के अध्यक्ष रंग बंग तेरांग ने अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित गुवाहाटी शाखा के मुखपत्र संवाद के अधिवेशन विशेषांक का विधिवत विमोचन कर मारवाड़ी समाज

उद्घाटन समारोह में उपस्थित प्रतिनिधिगण एवं समाजबंधु।

में लेखन और साहित्य के प्रति बढते रुझान की चर्चा करते हुए इसे एक शुभ संकेत बताया। उल्लेखनीय है कि संवाद का संपादन हिन्दी दैनिक प्रातः खबर के युवा संपादक श्री प्रमोद तिवारी ने किया। ज्योतिप्रसाद अग्रवाल के साहित्य योगदान की चर्चा करते हुए श्री तेरांग ने कहा कि आज समाज में काफी नये चेहरे उभर कर सामने आये हैं, जो असमिया कला, साहित्य और सस्कृति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि मेघालय के राज्यपाल श्री मुसाहारी, असम के मुख्यमंत्री श्री गोगोई एवं असम साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री तेरांग ने अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी में अपना वक्तव्य रखा। इसके पूर्व सम्मेलनाध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका ने अपने सम्बोधन में सम्मेलन की प्रासंगिकता और चेतना पर्व के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देते हुए बताया कि अतीत से चली आ रही घुंघट प्रथा, विधवा विवाह, नारी शिक्षा के प्रति समाज की उदासीनता और मृतक भोज को बन्द करने एवं कई सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाने में सम्मेलन ने सफलता हासिल की। समाज में नारी शिक्षा के बढते प्रचलन के कारण आज हमारी बहन बेटियां उच्च पदों पर आसीन हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने राजस्थानी भाषा में दिये गये अपने उद्बोधन में समाज और परिवार में आये हुए बिखराव की रोक पर बल दिया है। गौशाला, मन्दिर और धर्मशाला बनाने की प्रवृत्ति को रोकर उसके स्थान पर समाज में असमर्थ लोगों को शिक्षा, सहायता और रोजगार देने पर बल दिया। समाज के अवदान की चर्चा करते हुए श्री रुँगटा ने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल उद्योग–व्यापार के माध्यम से धन कमाना ही नहीं है, बल्कि हम जिस स्थान पर रहते हैं, वहां का सर्वांगीण विकास हो यह हमारी प्राथमिकता है। इसके पूर्व साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री तेरांग ने असमिया साहित्य, कला संस्कृति के क्षेत्र में तथा नगर पालिका में चेयरमैन के रूप में रहकर योगदान करने वाले मारवाड़ी समाज के १६ व्यक्तियों को प्रशस्ति पत्र, शाल एवं गामोछा प्रदान कर सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि असमीया कला–साहित्य और संस्कृति के विकास में रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाल का अतुलनीय योगदान रहा है। स्थानीय समाज के साथ समरसता और सौहार्दपूर्ण रिस्ते को मजबूत बनाने की परम्परा को आगे बढ़ते हुए समाज के कई बुद्धिजीवियों ने असमिया साहित्य संस्कृति में योगदान दिया और कुछ वर्तमान में दे भी रहे हैं। इन सृजन कर्ताओं के कार्यो को सम्मान प्रदान करते हुए सम्मेलन ने इस अधिवेशन में साहित्य के क्षेत्र में योगदान देने वालों को सम्मानित किया।

ज्योतिप्रसाद अग्रवाल के साहित्य योगदान की चर्चा करते हुए श्री तेरांग ने कहा कि आज समाज में काफी नये चेहरे उभर कर सामने आये हैं, जो असमिया कला, साहित्य और सस्कृति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। – श्री रंग बंग तेरांग

सम्मेलन का युवा एवं महिला सत्र और उत्साहवर्धक रहा। जोरहाट की दन्त चिकित्सक एवं प्रसिद्ध लेखिका डॉ। सुनीता अग्रवाल ने महिला सत्र का संचालन किया। वहीं दूसरी और युवा सत्र का संचालन मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री संजीव गोयल ने किया। महिलाओं की समस्या, पारिवारिक

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन चेतना पर्व २०१०
तृतीय प्रान्तीय कार्यकारिणी सभा

उत्पीड़न, दाम्पत्य जीवन में आये बिखराव के कारण समाज में बढ़ती हुई परित्यक्ताओं की संख्या तथा कन्या भ्रूण हत्या पर चिन्ता व्यक्त कर इसकी रोकथाम हेतु विस्तृत रूप से चर्चा की गई चर्चा और बहस में सम्मेलनाध्यक्ष डॉ। हरलालका के अलावा कामपुर की श्रीमती शान्ता अग्रवाल, तेरापंथ महिला परिषद की अध्यक्षा मधु डागा, शशि शर्मा, युवा मंच के अशोक अग्रवाल, माणिक चन्द नाहटा जीतेन्द्र जैन, कंचन केजड़ीवाल, सिलचर के दुलीचन्द शर्मा, रितु अग्रवाल, बेला नाऊका एवं अरविन्द शर्मा ने अपने अपने विचार पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत किये। युवा सत्र में मारवाड़ी युवाओं में संस्कार की कमी पर चर्चा हुई। और सभी वक्ताओं ने एकमत से स्वीकार किया कि हमारे युवा संस्कारहीन होते जा रहे हैं। आवश्यकता है युवाओं पर अभिभावकों द्वारा विशेष ध्यान देने की। कई वक्ताओं का मानना था कि संस्कार न तो बाजार में बिकता है और न कोई इसका इन्जेक्सन है। संस्कार घर, परिवार में ही मिलते हैं। अत घरों में संस्कारों के प्रति जागरूक और सचेत होने की आवश्यकता है। बहस में रमेश चांडक, प्रमोद तिवारी, चन्द्रप्रकाश शर्मा, तिनसुकिया के अशोक अग्रवाल एवं रोशन भारद्वाज, राजकुमार शर्मा, प्रेमलता खण्डेलवाल आदि अनेक वक्ताओं ने भाग लेकर अपने–अपने विचार व्यक्त किये। प्रतिनिधि सत्र में विभिन्न विषयों पर प्रस्तवों को पारित करने के पीछे सम्मेलन की यह भावना रही है कि गौहाटी चिकित्सा महाविद्यालय में इलाज के लिए सैकड़ों की संख्या में रोगी और उनके परिजन आते हैं, परन्तु कम किराये पर आवास तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन की उपयुक्त व्यवस्था न होने की वजह से उन्हे मानसिक और आर्थिक बोझ झेलना पड़ता है। इन्ही परेशानियों को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन ने यह प्रस्तावगृहीत किया। एक अनुमान के अनुसार इस परियोजना में लागत तीन से चार करोड़ रूपये की आयेगी। उन्मुक्त सत्र में सिलचर के दीपचन्द शर्मा, डिब्रुगढ़ के बसन्त गाड़ोदिया, नवगांव के जुगल जाजोदिया, प्रमोद स्वामी एवं अनेक वक्ताओं ने भाग लिया।

समापन समारोह : इस अवसर पर सम्मेलनाध्यक्ष ने अधिवेशन के सफल आयोजन के लिए स्वागताध्यक्ष श्री माणिकचन्द जालान, स्वागत मंत्री श्री विजय सिंह डागा, शाखा अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द लोहिया एवं शाखा मंत्री ललित धानुका का फुलाम गामोछा से स्वागत किया। स्वागताध्यक्ष श्री माणिकचन्द जालान एवं स्वागत मंत्री श्री विजयसिंह डागा ने स्वागत समिति के अन्तर्गत गठित उपसमिति संयोजक एवं सदस्यों का फुलाम गामोछा से स्वागत किया और समस्त कार्यकर्ताओं के दिन रात जुटकर अधिवेशन को सफल बनाने हेतु दिये गये सहयोग के प्रति भूरि–भूरि प्रशंसा की और धन्यवाद प्रदान किया।

स्वागत मंत्री श्री विजयसिंह डागा द्वारा अधिवेशन में पधारे समस्त विशिष्ट अतिथियों, सम्मेलन के राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारीगण एवं पूर्वोत्तर के विभिन्न भागों से आये प्रतिनिधियों के सहयोग के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया। अन्त में सभापति द्वारा समारोह के सामापन की घोषणा के साथ त्रयोदश अधिवेशन सम्पन्न हुआ।◆

With Best Compliments From :-

Khaitan Electricals Ltd.

46C, J. L. Nehru Road
Kolkata – 700071
Phone : 2288 8391/92/93

मुझे गर्व है कि मैं सम्मेलन का हिस्सा हूँ

- रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन से मेरा जुड़ाव हुए एक लम्बा समय व्यतीत हो गया है। मेरा सम्मेलन से यह जुड़ाव इसलिए नहीं है कि मैं मारवाड़ी समाज की एक इकाई हूँ। अपितु इसलिए है कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन केवल एक संगठन नहीं है, यह तो सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज में चेतना का आलोक प्रसारित करने वाला प्रकाश स्तम्भ है। वर्तमान युग में समाज ने जिस तरह से विभिन्न पक्षों में सफलताओं का ध्वज फहराया है, ख्याति अर्जित की है, वहीं दूसरी तरफ पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध से चुधियाये हुए हमारे मारवाड़ी समाज में विभिन्न प्रकार की त्रासदियों ने भी जड़े डाली हैं। समय के साथ जो शनैः शनैः गहरी होती जा रही हैं। दहेज–हत्या, दिखावा, फिजूलखर्ची, तलाक, वधू–प्रताड़ना, कन्या भ्रूण हत्या, अन्तर्जातीय विवाह जैसी दुःखद परम्पराओं के शिकंजों में फंसा हुआ है।

यहां सोचने वाली बात यह है कि हमारे मारवाड़ी समाज की पहचान इसके सदस्यों की ईमानदारी, मेहनत, कर्तव्यबोध, मिलनसारिता, व्यवहार कुशलता एवं परोपकार की भावना रही है। हमारा यह समाज सदा ही सादा जीवन उच्च विचार लोकोक्ति का अनुवायी माना जाता रहा है। यह अकाट्य सत्य है कि समय के साथ हमारे समाज ने तरक्की की है। परन्तु (इस तरक्की ने उसे महत्वाकांक्षी भी बनाया है। फलतः यह भ्रमित होकर समझें या मदान्ध होकर) अपनी गरिमामयी परम्पराओं और संस्कृति को विस्मृति करता जा रहा है इस स्थिति ने सामाजिक मूल्यों का जो ह्रास किया उससे समाज की प्रतिष्ठा पर चोट पहुँचने लगी। ऐसे समय में बहुत बड़ी जरुरत थी सामाजिक मूल्यों के ह्रास पर अंकुश लगाने की। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने सामाजिक अवनति पर विराम लगाने एवं समाज में व्याप्त त्रासदियों के निराकरण को अपना महत्त्व दायित्व समझते हुए इस पक्ष में समाज को सचेत करने के निरन्तर प्रयास किए हैं। इस प्रक्रिया में जैसे–जैसे सम्मेलन की गतिविधियां बढ़ती रही, साथ ही साथ इसका स्वरूप भी बढ़ता रहा। अनेक समाज हितैषियों ने सम्मेलन से अपना जुड़ाव बनाया। जैसे–जैसे स्वरूप बढा, वैसे–वैसे हमारी संस्कृति और हमारी परम्पराओं से समाज को अवगत करवाने व उन्हें बचाए रखने के लिए, समाज को जोड़े रखने के लिए सम्मेलन की गतिविधियाँ भी बढती रही। सम्मेलन की यह सजगता वह आधार है। जो सम्मेलन के साथ मेरा जुड़ाव अन्तर्मन से बनाए हुए है।

किसी संगठन की चहोत्तर वर्षो की यात्रा और देश के कई नगरों में उसकी शाखाओं का होना यह प्रमाणित कर देता है। कि संगठन के सिद्धान्त, संगठन की कार्य प्रणाली सामाजिक पक्ष हेतु कल्याणकारी है, जागृति लाने वाले है। दिनांक २५ दिसम्बर २००९ को आयोजित हुए सम्मेलन की कौस्तुभ जयन्ती के भव्य समारोह में उपस्थित अतिथियों, सम्मेलन के पदाधिकारियों सदस्यों का जो उत्साह दिखा एवं उपस्थित विद्वतजनों ने अपने सम्मेलन सम्बन्धी कार्य प्रणाली को व्यक्त करते प्रेरक व सारगर्भित अभिभाषण हमारे सम्मुख रखें वे सभाकक्ष में उपस्थित समाज हितैषियों में जोश और जागरुकता का संचार करने वाले भी थे और सम्मेलन को नई दिशा देने वाले भी थे।

समारोह की उद्घाटन कर्ता डॉ. सरला बिड़ला ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही **''बदलते समय के साथ समाज को बदलना होगा।''** मै आपका ध्यान इस वाक्य की तरफ लगाना चाहता हूँ। चूंकि समय परिवर्तनशील है, बदलाव जीवन की नियति है पर समय के साथ बदलने से सरलाजी का तात्पर्य यह है कि आज का यह युग तरक्की, शिक्षा और विज्ञान का युग है। हमें इस दिशा में आगे बढ़ने की सोच का विस्तार करना है। आधुनिकता की चकाचौंध से चुंधियाया हुआ यह समाज समय के साथ बदलना जरुरी है का अर्थ यह न निकाले कि हम अपनी परम्पराओं को भूल जाएं, पाप और पुण्य का अन्तर न समझें, नेकी और बदी का अर्थ मिटा दें, उत्थान और पतन की पहचान खो दें। निःसंदेह हमें बदलते समाज के साथ बदलना चाहिए। पर अपने गरिमामय अतीत, अपनी संस्कृति, अपनी परम्पराओं की महत्ता और उपादेयता को समझना है, समझाना है व उसे कायम रखना है।

सम्मेलन ने सामाजिक परम्पराओं और राजस्थानी संस्कृति से समाज को अवगत करवाने तथा समाज में व्याप्त विसंगतियों को मिटाने हेतु सदैव सतत प्रयास किये हैं। जागृति की मशाल जलाई है। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं सम्मेलन का हिस्सा हूँ। अपने जुड़ाव काल में मैंने सम्मेलन की अनेक गतिविधियों में सहभागिता की है, अनेक परिचर्चाओं में अपने विचार रखे हैं। अनेक अधिवेशनों और आन्दोलनों में शामिल हुआ हूँ। इस अवधि के कई ऐसे क्षण भी हैं जो अविविस्मरणीय हैं जो मेरी स्मृति से सदैव जुड़े रहेंगे। पर मैं इस बात पर हर पल गर्व महसूस करता रहूँगा कि सम्मेलन की कौस्तुभ जयन्ती का आयोजन मेरे सचिव काल में हुआ और मुझे इसमें सम्मलित होने का अवसर मिला।◆

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Travel bag + Books worth Rs. 1080/-

OR

Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

Over-night travel bag worth Rs. 360/-
OR
Books with every 1 year subscription

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books **OR** ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag **OR** ☐ Books

Name : Mr./Ms. ____________________

Address : ____________________

____________________ City/District : ____________________

State : ____________________ Country : ____________________ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ____________________ Mobile : ____________________ Landline : ____________________ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____________ dated: ____________ for Rs. ____________ drawn on: ____________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ____________________ date: ____________

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, Business Economics, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

खुश रहने की कला कुछ अनुभव

– डॉ. सुनीता अग्रवाल, गुवाहाटी

हर इंसान सुखी रहना चाहता है। हम अपने जीवन में जो भी कार्य करते हैं उसका लक्ष्य एक ही होता है कि हमें सुख प्राप्त हो या हम खुश रह सकें। खुशी ऐसी वस्तु है, जो मांगे नहीं मिलती, जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है। यह अद्भुत है, क्योंकि इसे जितना बांटो उतनी ही बढ़ती है। हम सभी चाहते हैं कि दुख हमारे निकट से भी न गुजरे? पर क्या आपने कभी यह सोचा है कि आखिर यह खुशी है क्या? यह कहां मिलती है? कौन से बाजार में उपलब्ध है? आइये, इन बातों पर जरा विचार करें।

विश्व के भिन्न–भिन्न दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिकों ने इंसान को खुश रहने के अलग–अलग तरीके बताये हैं। उन्होंने कई तरह के सूत्र भी तैयार किये हैं। मैं यहां पर खुश रहने के ऐसे ही कुछ उपायों के बारे में लिख रही हूं, जिनका पालन कर मैंने अपने जीवन में खुश रहना सीख लिया है। अब किसी भी तरह की बात मुझे दुखी या विचलित नहीं करती और सच मानिए, ये ऐसे सीधे और सरल उपाय हैं कि आप भी इन्हें अपने जीवन में आसानी से ढाल सकते हैं।

खुश रहना या दुखी होना हमारे स्वयं के ऊपर निर्भर करता है। खुशी और दुख हर तरह की अनुभूति हमारे दिमाग की उपज है। कोई परिस्थिति या बात जो हमें दुखी करती है वो किसी और के लिये खुशी की बात भी हो सकती है। यह निर्भर करता है हमारी सोच पर। उदाहरण के तौर पर जब उग्रवादी बम फोड़ते हैं तो उन्हें बड़ी खुशी होती है। पर यही बात अन्य लोगों के दुख का कारण बन जाती है।

खुश रहने के लिये सबसे जरूरी है अपनी सोच को बदलना। पहले आप यह सोचना शुरु कीजिए कि आप खुशनसीब हैं कि आपने इंसान के रूप में जन्म लिया। अक्सर जब हम दुखी होते हैं तो अपनी तकदीर को कोसते हैं और भगवान से शिकायत करते हैं कि मेरे साथ ही हमेशा ऐसा क्यों होता है? क्यों मुझे इंसान बना दिया। मुझे अगले जन्म में जानवर ही बना देना। वो ही ज्यादा सुखी होते हैं। इत्यादि, इसके साथ ही हम यह भी अनुभव करना शुरु करते हैं कि हम बदनसीब हैं। मैं भी पहले ऐसा ही सोचती थी। पर अब ऐसा नहीं है। अब मैं अपने आप में बड़ी खुश रहती हूं। नीचे लिखी गयी बातें पढ़कर शायद आपकी भी सोच बदल जाए और आप भी स्वयं को खुशनसीब समझने लगें कि आपने इंसान के रूप में जन्म लिया।

यह बात तो सभी जानते हैं कि मनुष्य सब जीवों में श्रेष्ठ है। यह इसलिये क्योंकि मनुष्य के सिवा किसी भी जीव में तर्कपूर्ण बुद्धि नहीं होती। सिर्फ मनुष्य ही अपनी बुद्धि दुवारा संचालित होते हैं। बाकी जानवर संचालित होते हैं अपनी प्रवृत्ति द्वारा। उनमें सोचने की और दूसरों से अलग कुछ करने की क्षमता नहीं होती। वे पृथ्वी पर सर्वप्रथम आने से लेकर आज तक एक ही तरह की जीवन शैली अपनाते आ रहे हैं। पर इंसान अपनी कल्पना शक्ति से चांद पर पहुंच गया है। उदाहरण के तौर पर– जानवरों ने कभी भी अपने घर का नये सिरे से निर्माण करने या उन्हें उन्नत बनाने की कोशिश नहीं की। सांप आज भी बिल में रहते हैं, शेर मांद में इत्यादि। उन्होंने कभी कोशिश नहीं की कि अपना घर बदलें। पर मनुष्य जो पहले गुफाओं में रहता था, आज मंगल ग्रह पर जमीन खरीद रहा है, घर बनाने के लिये।

हम उत्कृष्ट हैं, क्योंकि हममें कल्पना करने की शक्ति है। आज तक हमें जितने भी सुख–सुविधा के साधन प्राप्त हुए हैं, वे किसी न किसी इंसान की ही कल्पना शक्ति का नतीजा है। हकीकत में देखा जाए तो यह क्षमता सिर्फ कुछ लोगों में ही नहीं होती, बल्कि यह हम सभी में है। जरूरत है सिर्फ इसे पहचानने और इसका सही ढंग से उपयोग करने की।

हममें अपनी इच्छा से भ्रमण करने की, बोल कर अपने मन के भाव प्रकट करने की, अपनी जरूरत के अनुसार अपने वातावरण को बदलने की, अपने चिंतन और कर्मों पर स्वयं नियंत्रण रखने की विशेष क्षमता है। तो हुआ न मनुष्य अन्य जीवों से श्रेष्ठ। इसीलिये खुश

हो जाइए कि आपने इंसान के रूप में जन्म लिया।

हर दिन कुछ समय यह सोचकर बितायें कि वह क्या है, जिससे आपको खुशी मिलती है। आप यह सोचें कि आपके जीवन में क्या–क्या अच्छा हुआ है। आप देखेंगे आपकी खुशी बढ़ेगी। हर दिन कुछ समय ऐसा कोई कार्य करें, जिससे आपको लगे कि आप खास हैं। जैसे कि अपने लिये कुछ अच्छा खाना बनाएं या फिर कहीं बाहर खाने जाएं, लंबे सफर पर जाएं, सैर करें, सिनेमा देखें, नहाने में समय लें, स्वयं को सजाएं–संवारें। यानि कि स्वयं को लाड़–प्यार करें। एक छोटा–सा वाकया बताती हूं अपने जीवन का। एक बार मैं बड़ौदा गयी थी किसी काम से। हमें पूरे सप्ताह कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। इसीलिये रविवार को मैं देर तक सोती रही। पर उठकर, नहा–धोकर एक होटल में खाना खाने गयी। वहां जब बैरा मुझे पूछ–पूछ कर खाना खिला रहा था, तो मुझे ऐसा लगा कि मैं रानी हूं। क्योंकि घर पर मैं सबको पूछ–पूछ कर खाना खिलाती थी और उस दिन मुझे कोई पूछ रहा था। आपको शायद लगे कि यह भी कोई बात हुई, पर यह भी कर के देखें।

किसी भी तरह की परिस्थिति हो, उससे हल्के–फुल्के तरीके से निकलने की कोशिश करें। यानि कि जोर का झटका, धीरे से लगे। समस्याएं आने पर घबराएं नहीं। एक बात समझ लें, हमारे जीवन में केवल परिस्थितियां ही आती हैं, उन्हें समस्या बनाते हैं हम स्वयं। परिस्थिति को समझकर दिमाग ठंडा रख, शांति से सोच विचार करें। उसका समाधान अवश्य निकलेगा। बेकार में विचलित होकर आप उसके चक्रव्यूह में ज्यादा ही फंसेंगे। याद रहे, सिर्फ आप ही नहीं हैं, जिनको कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। हर इंसान के जीवन में ऐसा होता है। यदि आप खुश रहना चाहते हैं तो अपनी परिस्थिति को नहीं मन: स्थिति को बदलने की कोशिश करें। एक बात और, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। हर रोज कम से कम पंद्रह से बीस मिनट स्वयं के लिये निकालकर थोड़ा व्यायाम करें। हो सके तो थोड़ा जप और ध्यान भी करें। इससे आपके मन को शांति मिलेगी और दिमाग भी ठंडा रहेगा।

स्वयं पर गर्वित हों। अपनी क्षमताएं पहचानें और उन्हें विकसित करें। लोग आप का विरोध करेंगे, हंसेंगे, कोई बात नहीं। यदि इससे आपको खुशी मिलती है तो दूसरों की परवाह न करें। पर ध्यान रखों कि वह गलत और असामाजिक कार्य न हो। अब मैं युवाओं के साथ काम करती हूं तो उन्हीं के साथ ज्यादातर घूमती हूं। इसे बहुत से लोग बुरा भी समझते हैं तो भी मुझे परवाह नहीं। क्योंकि मुझे पता है कि मैं कुछ गलत नहीं कर रही। एक बात समझ लीजिये। आप जब भी कुछ करते हैं तो कुछ लोगों को अच्छा लगता और कइयों को बुरा। आप किस–किस को खुश रखेंगें। याद रखें, ऐसे ही शांत बहते पानी में नाव चलाकर मजा नहीं आता, नाव चलाकर मजा तभी आता है जब पानी में लहरें हों। हमेशा नेक, खुश रहने वाले और सकरात्मक सोच वाले लोगों का साथ लीजिये। उनके साथ रहने से हमारे अंदर भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा।

एक और बात का ध्यान रखें। कभी भी किसी वस्तु की प्राप्ति में खुशी खोजने का प्रयत्न न करें। क्योंकि यदि वस्तु की प्राप्ति से हमें खुशी प्राप्त होती तो विश्व के धनी लोग दुखी क्यों होते। यह खुशी क्षणिक होती है। जैसे कि एक बच्चे को आज एक साइकिल या कोई खिलौना चाहिए। आपने उसे वो ले दिया। उससे थोड़ी देर खेलने के बाद वह उब जायेगा और नया खिलौना मांगेगा। इसी तरह आप अपने मनपसंद कपड़े खरीदे, आप खुश हुए। पर दूसरे ही दिन बाजार में उससे भी अच्छे डिजाइन के कपड़े निकल गये, अब आप वो खरीद भी नहीं सकते, क्योंकि कल ही नये कपड़े खरीदे थे। इसीलिये आप दुखी हो जाते हो। तो जो कपड़े आपको कल खुशी दे रहे थे, आज आपके दु:ख का कारण बन गये। अंत में सबसे जरूरी बात। सदैव ध्यान रखें कि आपको भी खुश रहने का अधिकार है। ऐसा न सोचें कि खुश होना मेरे नसीब में नहीं है। आप यदि ऐसा सोचेंगे तो आप कभी खुश नहीं होंगे। यदि जरूरत पड़े तो रोज स्वयं से कम से कम एक बार कहें कि मैं खुश रहने के लिये ही पैदा हुआ, हुई हूँ।

अच्छी किताबें पढें। किताबें इंसान की सबसे अच्छी साथी होती हैं। इनसे हमेशा कुछ अच्छा सीखने को ही मिलता है।

दोस्तों, ऐसा मत सोचिएगा कि लिखना और कहना आसान है, पर उस पर अमल करना कठिन होता है। पर ऐसा नहीं है। विश्वास कीजिये, मैंने यह बातें ऐसे ही नहीं लिखी हैं। मैने इनका अनुभव अपने जीवन में किया है। भगवान से प्रार्थना करती हूं कि आप सभी को सदा खुश रखें।

खुश रहें, खूब हंसे और लोगों में खुशियां बांटें।◆

आपकी आवाज व विचारों को देश–विदेश के कोने–कोने में बुलन्दी देने हेतु।

गौरीशंकर डालमिया पर भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी

भारत सरकार ने उनके जन्म दिवस १२ नवम्बर को श्री गौरीशंकर डालमिया पर स्मारक डाक टिकट जारी किया है। कुष्ठ निवारण तथा विकलांग बच्चों की सेवा तथा पुर्नवास के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए यह सम्मान उन्हें दिया गया है।

मारवाड़ियों के नाम पर अब तक १३ महापुरुषों (जैन साधुओं को छोड़कर) की स्मृति में डाक टिकट निकाल गये हैं। सर्वश्री (१) डॉ. भगवान दास की स्मृति में १९६९ में, (२) जमुनालाल बजाज की स्मृति में १९७० में, ३) महाराज अग्रसेन की स्मृति मे १९७६ में, ४) डॉ. राम मनोहर लोहिया की स्मृति में १९७७ एवं १९९७ में, ५) जी.डी. बिरला की स्मृति में १९८४ में, ६)हनुमान प्रसाद पोद्दार की स्मृति में १९९२ में, ७) ब्रिजलाल बियाणी की स्मृति में २००२ में, ८) बाबू गुलाब राय की स्मृति में २००९ में, ९) डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी की स्मृति में २००८ में एवं १०)रामचरण अग्रवाल की स्मृति में २००९ में, ११) डॉ. बी. के बिरला की स्मृति में २००९ में, १२) डॉ. हरकचन्द नाहटा की स्मृति में २००९ एवं १३) श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया की स्मृति में २००९ में डाक टिकटें निकाली गयी हैं। अब अगली टिकट २००९ में ही गौरीशंकर डालमियाजी की स्मृति में निकली है, जिसे डाक तार विभाग ने १२ नवम्बर २००९ को जारी कर दिया है।

श्री गौरीशंकर डालमिया का जन्म १२ नवम्बर १९१० को बिहार के मुंगेर जिले में लखीसराय गांव में हुआ था। उन्होंने कोलकाता में पढ़ाई की। जब वे १७ वर्ष के थे तब उनके पिताजी का देहान्त हो गया और उन्होंने पारिवारिक व्यवसाय की बागडोर संभाली।

महात्मा गांधी के आह्वान पर पारिवारिक व्यवसाय को छोड़कर संथाल परगना के एक गांव जसीडीह में रहने लगे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। १९२६ में महात्मा गांधी की प्रेरणा पाकर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया और खादी धारण करने का संकल्प किया। १९३१ में नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए उन्हें कारावास हुआ। १९३६ में स्थापित संथाल पहाड़िया सेवा मंडल, देवघर के संस्थापक महासचिव बने। स्वतन्त्रता के बाद मंडल को फेडेरेशन ऑफ इन्डियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री (फिक्की) का पुरस्कार दिया गया तथा साथ ही उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

गौरीशंकर डालमिया १९३७ से १९५२ तक बिहार विधान सभा और १९५२ से १९७२ तक बिहार विधान परिषद के सदस्य चुने गये।

वे विभिन्न शैक्षणिक एवं व्यापार संस्थानों से जुड़े रहे। वे भागलपुर विश्वविद्यालय सीनेट के सदस्य थे। वे फिक्की, नई दिल्ली एवं इंडियन एम्प्लॉयर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली की कार्यकारिणी समिति के सदस्य थे। वे १३ वर्षों तक बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, पटना के अध्यक्ष रहे और बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स, पटना के अध्यक्ष के रूप में भी दो कार्यकाल ४ वर्ष के पूरे किए। वे साउथ बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स के संस्थापक अध्यक्ष थे और लगभग २० वर्षों तक इसके अध्यक्ष बने रहे।

वे तीन सत्रों के लिए बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रहे।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में उनकी विशेष रुचि थी। इसलिए उन्होंने शिक्षा, कुष्ठ रोग, उन्मूलन, विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास, आदिवासियों (आदिम जनजाति) के उत्थान, प्राकृतिक चिकित्सा आदि से जुड़े कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने ४० सेवा केन्द्रों और दवाई वितरण केन्द्रों तथा ३ अस्पतालों के माध्यम से कुष्ठ रोगियों की सेवा की।

कुष्ठ रोग तथा विकलांग बच्चों के पुर्नवास के कार्यों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपना जीवन संथाल परगना के पिछड़े डिवीजन के ६ जिलों के दलितों, जन–जाति समूहों एवं पहाड़िया (एक आदिम जनजाति) के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। इसके लिए उन्होंने पहाड़ियों के लिए ३० प्राथमिक विद्यालयों, चिकित्सा के लिए २ चिकित्सा केन्द्रों तथा अन्य स्थानों पर १० चिकित्सा केन्द्रों (अस्पतालों) की स्थापना की। इसके अलावा २०० प्राथमिक विद्यालयों एवं द्विवतीय पाली स्कूलों, ३ हाई स्कूलों, ३ मिडिल स्कूलों, ४ छात्रावासों एवं ४ अस्पतालों, २४ बालबाड़ियों (क्रेच) एवं शिशु पालन केन्द्रों की स्थापना भी की।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने दो दशकों तक हिन्दी में प्रकाश तथा अंग्रेजी में दि स्पार्क नामक साप्ताहिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। १९५० के उपरान्त उन्होंने संथाली एवं नागरी लिपि में कई पुस्तकें प्रकाशित की। उन्होंने संथाली भाषा के लिए नागरी लिपि स्वीकृत कराने हेतु प्रयास किए जिसे सरकार द्वारा मान्यता भी मिल गई।

१६ जून १९८८ को उनका निधन हो गया।

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या–१११
नाम : साऊथ ईस्ट्रन कैरियर्स प्राइवेट लि०
प्रतिनिधि : अरुण कुमार गुप्ता
पद : डायरेक्टर
कार्यालय का पता :
एस.सी.ओ ४२ ओल्ड जुडिशियल काम्पलैक्स,
सिविल लाईन, गुड़गाँवा–१२२००१
दूरभाष : (०१२४) ४०६७१९०–९१–९२
फैक्स : (०१२४) ४०६७१९९
मोबाईल : ०९३१२२७१६२१
ई–मेल : arun @secl.net
निवास का पता :
ए–११५ सुशान्त लोक फेज–१
गुड़गाँवा

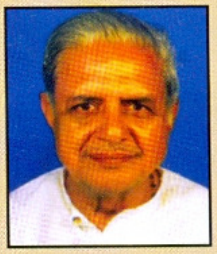

संरक्षक सदस्य संख्या–११२
नाम : स्कीपर लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री साधुराम बंसल
पद : अध्यक्ष
कार्यालय का पता :
३ए, लाउडन स्ट्रीट, प्रथम तल्ला,
कोलकाता–७०००१७
दूरभाष : (०३३) २२८९२३२६
फैक्स : (०३३) २२८९५७३३
ई–मेल : slpoddar@bansalgroup.co.in
निवास का पता :
३ए, लाउडन स्ट्रीट
कोलकाता–७०००१७

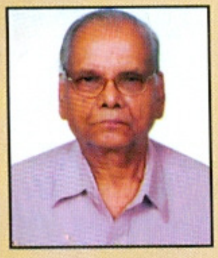

संरक्षक सदस्य संख्या–११३
नाम : एस.एल. डोकानिया फाऊण्डेशन
प्रतिनिधि : श्री श्याम लाल डोकानिया
पद : ट्रस्टी
कार्यालय का पता :
१०, निर्मल चन्द्र स्ट्रीट
कोलकाता–७०००१२
दूरभाष : (०३३) २२३७–५२५३/४६७३,
फैक्स : (०३३)२२२१–७४७४
मोबाईल : ९८३००६८१२७
ई–मेल : dokania@cal2.vsnl.net.in
निवास का पता :
ब्लाक बी, ९७ लेक टाऊन
कोलकाता–७०००८९

संरक्षक सदस्य संख्या–११४
नाम : इमामी लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री मोहन गोयनका
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
६८७, आनन्दपुर (इमामी टावर्स) ई.एम. बाईपास,
कोलकाता–७००१०७
दूरभाष : ०३३–६६१३६२६४
फैक्स : ०३३–६६१३६८००
मोबाईल : ०९८३०००५०३०
ई–मेल : mohan@emamigroup.com
निवास का पता :
६८७, आनन्दपुर (इमामी टावर्स) ई.एम.बाईपास
कोलकाता–७००१०७

संरक्षक सदस्य संख्या–११५
नाम : इमामी पेपर मिल्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री आदित्य अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
६८७, आनन्दपुर (इमामी टावर्स) ई.एम. बाईपास
कोलकाता–७००१०७
दूरभाष : ०३३–६६१३६२६४
फैक्स : ०३३–६६१३६४००
मोबाईल : ०९८३००१४३०३
ई–मेल : aditya@emamigroup.com
निवास का पता :
६८७, आनन्दपुर (इमामी टावर्स) ई.एम. बाईपास
कोलकाता–७००१०७

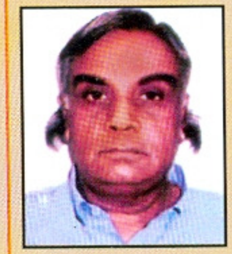

संरक्षक सदस्य संख्या–११६
नाम : श्री जी.आर. एक्सपोर्ट प्रा० लि०
प्रतिनिधि : श्री दिलीप कुमार राजगड़िया
कार्यालय का पता :
माईका हाऊस,
२ए, प्रीटोरीया स्ट्रीट,
कोलकाता–७०००७१, प.बंग
दूरभाष : (०३३) २२८२ ००७२
फैक्स : (०३३) २२८२ ७५७५
ई–मेल : grmica@vsnl.com
निवास का पता :
माईका हाउस, चौथी मंजिल
२ए, प्रीटोरीया स्ट्रीट,
कोलकाता–७०००७१, प.बंग.

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या–११७
नाम : साल्टी इनफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री सूर्य प्रकाश बागला
पद : चेयरमैन
कार्यालय का पता :
एई–४०, सेक्टर–I, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता–७०००६४, प.बंग
दूरभाष : (०३३) २३५८–६३३५, ४०२१५४२१
फैक्स : ०३३–२३५८७६२१
मोबाईल : ०९८३१०४७९००
ई–मेल : saltee@salteegroup.com
निवास का पता :
एई–४०, सेक्टर–1, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता–७०००६४, प.बंग.

संरक्षक सदस्य संख्या–११८
नाम : बालमुकुन्द स्पन्ज एण्ड आयरन लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री नवल कुमार कानोडिया
कार्यालय का पता :
१८, आर.एन. मुखर्जी रोड, प्रथम तल्ला,
कोलकाता–७००००१
दूरभाष : (०३३) २२१३७३९८,
फैक्स : ०३३–२२१३७३९९
मोबाईल : ०९७४८७४३१०४
ई–मेल : balmukundsponge@gmail.com
निवास का पता :
१८ आर.एन. मुखर्जी रोड, प्रथम तल्ला,
कोलकाता–७००००१

संरक्षक सदस्य संख्या–११९
नाम : केजरीवाल इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री किशन कुमार केजड़ीवाल
पद : डाइरेक्टर
कार्यालय का पता :
१०६, नारकेलडांगा मेन रोड,
कोलकाता–७०००५४
दूरभाष : (०३३) २३६२९०५७
फैक्स : ०३३–२३६२८६३४
मोबाईल : ०९८३००४५४१०
ई–मेल : oscar@cal.vsnl.net.in
निवास का पता :
JC–२१, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता–७०००९१

संरक्षक सदस्य संख्या–१२०
नाम : नेवटिया माइन्स एण्ड इन्डस्ट्रीज
प्रतिनिधि : श्री बनवारी लाल नेवटिया
पद : मालिक
कार्यालय का पता :
सर्किट हाऊस रोड,
पोस्ट–चाईबासा–८३३२०१ (झारखण्ड)
दूरभाष : (०६५८२) २५६०९६७
फैक्स : (०६५८२) २५६५९६
मोबाईल : ०९८३००५५६०५
ई–मेल : blnewatia@yahoo.com
निवास का पता :
सर्किट हाऊस रोड,
पोस्ट–चाईबासा–८३३२०१ (झारखण्ड)

संरक्षक सदस्य संख्या–१२१
नाम : ईस्टर्न पोलीक्राफ्ट इन्डस्ट्रीज लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री केशर चन्द पाडिया
कार्यालय का पता :
१/१ए, भेनसीट्राट रो, प्रथम तल्ला
कोलकाता–१
दूरभाष : २२४८–७१४१/४४१०
फैक्स : २२४८–३६९१
मोबाईल : ९८३००३१५९६
ई–मेल : padiakc@cal.vsnl.net.in
निवास का पता :
"लेक टावर्स"
८७, साऊर्थन एवेन्यू
कोलकाता–२६

भूल सुधार

मई–२००९ के अंक में गलती से इनकी फोटो ४२ में छप गई थी। जबकी इनकी सदस्य संख्या ४१ है। कृपया सुधार कर लें।

संरक्षक सदस्य संख्या – ०४१
नाम : धनबाद फ्यूल्स लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री विनोद कुमार अग्रवाल
पद : निदेशक
कार्यालय का पता :
१३, एलगिन रोड, ४ तल्ला
कोलकाता – ७०० ०२०
टेलीफोन : (०३३) २२८९ ०७००
फैक्स : (०३३) २२८२ ७९४७
ई–मेल : info@maan.co.in
निवास : १६, मेफेयर रोड, फ्लैट नम्बर – २डी
कोलकाता – ७०० ०१९

With best compliments from :

Chiranjilall Agarwal

Shalimar Group of Companies

Shalimar Pellet Feeds Limited

Shalimar Hatcheries Limited

Sona Vets Private Limited

Contai Golden Hatcheries (E) Private Limited

Utkal Feeds Private Limited

17 A B & C Everest
46C Chowringhee Road
Kolkata 700 071

Phone Nos: 22882469, 22886439
Fax No: 22882496
E-mail : spfl123@vsnl.net
Website : www.shalimarpoultry.com

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री गोविन्द प्रसाद लड़िया
कार्यालय का पता :
७, मेन्गो लेन,
रूम न० ३०२, ३०३ (थर्ड फ्लोर)
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–०९३३१९२५२५२

नाम : श्री रमेश अग्रवाल
कार्यालय का पता :
श्री रामकुटीर हजारी लेन,
तेलांगा बाजार
कटक–७५३००९
मोबाईल नं.–०९४३७०३५४५३

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : नीशू जैन
कार्यालय का पता :
२/ए, आर.जी.कर रोड,
श्यामबाजार
कोलकाता–७००००४
मोबाईल नं.–९३३९६६३५१३

नामः रविन्द्र जैन
कार्यालय का पता :
५६ बी, इन्द्रा विश्वास रोड, बेलगछिया
टाला थाना के विपरीत
कोलकाता–७०००५७
मोबाईल नं.–०९६७४१६७००६

श्री गणेशाय नमः *श्री श्याम देवाय नमः* *श्री हनुमते नमः*

छ यात्रा में अपार सफलता के बाद इस वर्ष भी..

चार धाम की पावन यात्रा

पंजीकरण 15,500/- रू0 प्रति व्यक्ति
(पंजीकरण की अंतिम तारीख 30-01-2010)

- दिनांक 20 मई को हावड़ा से ट्रेन द्वारा हरिद्वार
- हरिद्वार से 2/2 बस द्वारा आरामदायक यात्रा
- कोलकाता के रसोईयों द्वारा उत्तम भोजन व्यवस्था

पंजीकरण शुल्क के अन्तर्गत जाने-आने,ठहरने व खाने-पीने की उत्तम व्यवस्था है।

मीडिया पार्टनर
सेवा-साधना
कोलकाता से प्रकाशित समाज,शिक्षा, स्वास्थ्य,धर्म आदि से परिपूर्ण मासिक पत्रिका

यात्रा संचालकःगोविन्द मुरारी अग्रवाल-9831195501

मातृभाषा एवं समाज से विरक्ति चिंता का विषय

– हनुमान सरावगी
पूर्व कार्यवाहक राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मुझे लगता है कि आधुनिकता से उत्प्रेरित संक्रमण ने मारवाड़ी–समाज को और विशेषकर प्रवासी मारवाड़ी–समुदाय को, समाज की मूल लोक–संस्कृति को ग्रसित करते हुए न्यूनाधिक परे धकेल दिया है। इसका प्रधान लक्षण है अपनी मातृ–भाषा से विरक्ति एवं क्रमश: उसका परित्याग। यह लक्षण प्रवासी मारवाड़ी समुदाय में उग्र रूप से है, जो अत्यंत चिंता का विषय है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषायी अंचल से परे प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अब सार्वजनिक रूप से क्या, अपने घर–परिवार में भी मारवाड़ी भाषा का व्यवहार नहीं करना चाहता। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ है कि प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अपनी लोक–संस्कृति से भी विच्छिन्न हो गया है क्योंकि भावों का संप्रेषण लोकभाषा से ही होता है।

भाव से संस्कार बनते हैं जिनसे लोक–संस्कृति जन्म लेती है, निरूपित विकसित और संरक्षित होती है। अर्थात् लोक–भाषा ही हमें लोक–संस्कृति से जोड़ती है। आज जब प्रवासी मारवाड़ी समुदाय से उसकी लोक–भाषा तिरोहित हो चली है, तो अब लोक–गीत भी तिरोहित हो चले हैं। मारवाड़ी अंचल की कलाओं से तो प्रवासी मारवाड़ी–समुदाय का कोई परिचय भी नहीं रह गया है ऐसा लगता है।

मैं कहूँगा कि प्रवासी मारवाड़ी समाज को अपनी भाषा, मारवाड़ी (परिष्कृत राजस्थानी) भाषा को अपने दैनिक जीवन में अपने घर–परिवारों में पूर्ववत् पूर्णत: अपनाना चाहिये। मारवाड़ी समाज की मौलिकता की सुरक्षा की यह प्रथम शर्त है, अनिवार्य बाध्यता है, अपरिहार्य अपेक्षा है। हमें अपने विश्वमान्य दार्शनिक भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ। सर्वपल्लि राधाकृष्णन के इन शब्दों का स्मरण करना चाहिये कि "हमारी कुछ क्षेत्रीय उपभाषाएँ करोड़ों देशवासियों द्वारा बोली जाती हैं जिनकी सांस्कृतिक प्रगति केवल उनकी भाषाओं से ही हो सकती है।" मारवाड़ी भाषा के संबंध में विख्यात भाषा–शास्त्री डॉ। सुनीत कुमार चाटुर्ज्या का यह आह्वान भी स्मरण योग्य है, "इस चिरयुवती, चिरनवीना, सुंदरी और गंभीर भाषा को फिर अपने घर की रानी बनाने की चेष्टा हर मरुदेशवासी का कर्तव्य है। भाइयों, अपनी मातृभाषा राजस्थानी का स्थान फिर ऊँचा करो, इससे अपनी मानसिक उन्नति करो और हृदय को उद्भासित करो।" हमें इसके लिये राजस्थानी भाषा में साहित्य–सृजन और उसके प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करना होगा। प्रयास होना चाहिये कि संरक्षण, सहाय्य दिया जाना अपेक्षित है।

मैनें लोक–संस्कृति के संदर्भ में लोक–कलाओं की चर्चा की है। हमें चाहिये कि हम मांगलिक अवसरों और पर्व–त्योहारों पर अपनी लोक–कलाओं, लोक–परम्पराओं को प्रोत्साहित करें। ऐसा हो कि मारवाड़ी घरों में जन्म, विवाह मांगलिक अवसरों, पर्व–त्योहारों पर लोक–गीत मूल रूप और लय–ताल में पुन: गूंजने लगे। गणगौर के गीत, फाल्गुन के गीत, देवी–देवताओं के गीत, नृत्य की झंकार, चंग या ढफ की गमक, ढ़ोल–नगाड़ों की धमक पुन: मुखर हो। अपनी लोक–कलाओं को पुनर्जागृत करने तथा उनको प्रवासी–मारवाड़ी समुदाय से सुपरिचित कराने के लिये हमें राजस्थान, हरियाणा और मालवा अंचल के मौलिक लोक–कलाकारों और उनकी कला–मंडलियों को समय–समय पर अथवा सामाजिक आयोजनों में आमंत्रित कर उनके कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करने चाहिये। इसी कड़ी में कलाकृतियों की प्रदर्शनियों के आयोजन भी वांछनीय हैं। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण का क्रियात्मक स्वरूप होगा। इसी में भाषायी पुनर्जागरण भी संभव है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी–भाषा को संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करने के लक्ष्य की पूर्ति भी भाषायी पुनर्जागरण से ही संभव होगी। इस लक्ष्य–पूर्ति का दूसरा सोपान है–राष्ट्र स्तर पर एक सशक्त अभियान चलाना जिसमें लम्बित एवं बहुप्रतीक्षित सम्मान हमारी समृद्ध मातृभाषा राजस्थानी को प्राप्त हो।

एक और महत्व का विषय जिसकी ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है, वह है अपने समाज के सम्पन्न वर्ग का और विशेषकर उद्योग और वाणिज्य में संलग्न बंधुओं एवं उनके प्रतिष्ठानों का अपने चतुर्दिक् स्थानीय समाजों के सदस्यों के दु:ख और अभावों को मिटाने और उनकी आर्थिक–सामाजिक तथा नैतिक उन्नति करने के लिये सक्रिय कार्य करना। इस प्रसंग में मेरा विचार है कि स्थानीय समाज से एकरस या समरस होने की आवश्यकता है और तभी ऐसे कार्य संभव हैं। प्रवासी मारवाड़ी समाज स्थानीय समुदायों की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु योगदान करके क्षेत्रीय असंतुलन और उससे उत्पन्न जन–क्षोभ एवं पृथकतावादी प्रवृत्तियों को समूल समाप्त करने के राष्ट्रीय प्रयास में सहभागी हो सकता है। ऐसा अवश्य किया जाना चाहिये। आवश्यकतानुसार इसके लिये समाज को एक पृथक् कोष की स्थापना करने के सम्बन्ध में निर्णय करना चाहिये, जिससे कि आर्थिक असंतुलन को नियंत्रित किया जा सके और अन्य स्थानीय समाज के लोगों में मारवाड़ी समाज के प्रति सद्भावना का सृजन किया जा सके।◆

– स्वास्तिक हाउस, गाँधी चौक, अपर बाजार, राँची–834001

अलगाववाद बनाम राष्ट्रवाद

- रमेश कुमार बंग, अध्यक्ष
आं.प्रा.मारवाड़ी सम्मेलन

भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही आध्यात्मिक प्रकृति वाला देश रहा है। उदारता, समरसता और सहिष्णुता यहाँ पर जीवन शैली के अंग रहे हैं। भारतीय सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रवाद को सबसे गहरा धक्का उस समय लगा जब साम्प्रदायिक आधार और द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त पर भारत वर्ष का विभाजन हो गया। यह अलग बात है कि सन् १९७१ में द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त का खोखलापन पाकिस्तान के विभाजन के रूप में सामने आया।

धर्म सापेक्ष पाकिस्तान अपनी राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित नहीं रख सका जबकि धर्म निरपेक्ष भारतवर्ष अपने राष्ट्रवाद और मजबूत राष्ट्रीय एकता के बल पर सब से विशाल और सुदृढ लोकतन्त्र के रूप में विश्व मंच पर स्थापित हुआ। भारत की यह उपलब्धि पड़ोसियों की आँखे में खटक सकती है। आजादी के बाद से ही कोई देश को भाषा के आधार पर तोड़ने के सपने देख रहा है तो कोई धर्म के आधार पर। पाकिस्तान ने तो हद ही कर दी। उसने १९४८, १९६५, और १९७१ में प्रत्यक्ष युद्ध किए जब मुँह की खानी पड़ी तो उसने भारत के विरूद्ध छद्मयुद्ध छेड़ दिया। करगिल में घुसपैठ पाकिस्तान के खतरनाक मंसूबों की चरम स्थिति थी। यहाँ पर भी उसे पराजय का समना करना पड़ा, फिर भी वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। २६.११.२००८ को उसने आतंकवादियों द्वारा मुम्बई पर हमला करवा के भारत को खुली चुनौती दे डाली। भारत की राजनैतिक जमातें अपनी दृढ इच्छाशक्ति के अभाव में पाकिस्तान को समुचित उत्तर नहीं दे पा रही हैं, यह हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए एक खतरनाक संकेत है। पूर्वोत्तर में चीन भी अपनी कुदृष्टि डालने लगा है। हमारी संप्रभुता और राष्ट्रीयता को वह अप्रत्यक्ष रूप से चुनौती दे रहा है, इसका माकूल जवाब दिया जाना चाहिए।

आज जब हमारा देश विकास की राह पर तेजी से आगे बढ रहा है, ऐसे में इस प्रकार की स्थितियाँ और घटनाएँ अच्छी बात नहीं है। कठोरतापूर्वक इनका निषेध होना चाहिए। भारत में अलगाववादी तत्वों की शत्रु पक्ष द्वारा हौसला अफजाई पड़ोसियों की ऐसी धृष्टता है, जिसका हर मोर्चे पर प्रतिकार होना चाहिए। शत्रुओं की चाल को नाकाम करने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी प्राचीन धार्मिक संहिष्णुता एवं भाई चारा की नीति का अनुशरण करें। साम्प्रदायिक सौहार्द्ध को किसी भी कारण से किसी भी कीमत पर बिगड़ने न दें सभी देश वासियों की सामूहिक जिम्मेदारी है कि विघटनकारी शक्तियों का डटकर मुकाबला करें और उन्हें परास्त करें। आतंकवादियों की कमर तोड़ने के लिए आवश्यक है कि हम अपने राष्ट्रधर्म पर साम्प्रदायिकता की काली छाया न पड़ने दें। हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि हम हिन्दू– मुस्लिम–सिक्ख– ईसाई–जैन–बौद्ध, अथवा कश्मीरी, राजस्थानी, बिहारी, मराठी, तामिल, तेलुगु बाद में हैं, उससे पहले भारतीय हैं। अपनी राष्ट्रीय एकता की रक्षा करना हमारा प्रथम धर्म है। सभी अपने–अपने धर्म का पालन करे अच्छी बात है, किन्तु राष्ट्र धर्म का पलन भी उसी तत्परता और निष्ठा से करें।

एक बात विशेष चिन्ता का कारण बनी हुई है कि आतंकवादी देश के आन्तरिक भागों में भी आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देने में सफल हो जाते हैं। अवश्य ही कहीं न कहीं कोई कमजोरी है, इस कमजोरी को दूर करने की आवश्यकता है। यह कमजोरी राष्ट्र के प्रति अटूट आस्था से ही दूर हो सकती है। हमारी राजनैतिक जमातों को इस ओर ध्यान देना चाहिए, दुर्भाग्य से राजनैतिक जमातें इस ओर ध्यान नही दे रही हैं।

यहाँ मैं बहुत ही आदरपूर्वक कहना चाहता हूँ कि मारवाड़ी समाज के पास अर्थार्जन का कौशल है, अर्जित धन को सर्वश्रेष्ठ रूप में व्यय करने की योग्यता है, धर्म और नीति का अवलम्ब है, सुदृढ चरित्र है, आचरण की पवित्रता है, दया और धर्म का भाव है तथा निष्ठापूर्वक राष्ट्र सेवा की आकांक्षा है फिर क्यों न मारवाड़ी समाज राजनीति में अपना योगदान देकर राष्ट्र के गौरव की वृद्धि में अपना योगदान दे। आज राजनीति में भले और अच्छे लोगों की बहुत कमी है, मारवाड़ी समाज का कर्तव्य है कि वह इस कमी को दूर करे। मारवाड़ी सम्मेलन के ७५ वें स्थापना दिवस पर मैं राजनिति में रुचि रखने वाले सभी भाई–बहनों से निवेदन करता हूँ कि वे राजनीति में सक्रिय होकर राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने में अपना योगदान दें।◆

With Best Compliments From :-

★★★

DEORAH SEVA NIDHI

CHARITABLE TRUST DEDICATED TO SERVICE
(Founder Trustee – Late S. L. DEORAH)

★★★

13E – Rajanigandha
25, Ballygunge Park, Kolkata A 700019

राजस्थानी साहित्य में विरह-वेदना

- ओंकार पारीक

राजस्थानी साहित्य जहां एक ओर लोकगीत, लोककथाओं, कहावतों से भरा हुआ पड़ा है, वहीं दूसरी ओर राजस्थान के विभिन्न भागों में बोले जानेवाली बोलियों में गीत, कविता, दोहे, सोरठे और पद आदि की भी रचना की गई है, तो प्रेम-विरह सना श्रृंगर रस, विधाओं में अनगिनत मोती बिखरे पड़े हुए हैं। आवश्यकता है उसको ढूंढकर सामने लाने की। आइए, हम राजस्थानी में रचित विरह-वेदना की कुछ रचनाओं का रसास्वादन करें। राजस्थानी ललनाओं के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन कवि ने कुछ इस प्रकार किया है-

''मृगनयनी, मृगपति, चन्द्रमुखी, कस्तुरी का तिलक
मृगरिपु, कटि सुन्दर, वणी, मारू औहे घाट।''

भावार्थ - मृगनयनी, चन्द्रमुखी, कस्तुरी का तिलक, ललाट पर धारण करनेवाली और सिंह की कमर के समान कमरवाली नारियां ही मारवाड़ में होती हैं। कवि फिर आश्चर्य चकित होकर कहता है -

''कद ये नाग विसासिया, नैण लिया मृग भल्ल
मान सरोवर कद गया, हंसा सीखण छल्ल।''

भावार्थ - इन नाग के समान वेणियों को धारण करने वालियों ने नागों को अपने विश्वास में ले लिया है- कब से इन लोगो ने हरिण के मालों ने नेत्रों को चुरा लिया और ये हंसों की चाल सीखने के लिए कब मानसरोवर गई।

प्रेमिका सदैव अपने प्रियतम के साथ रहना चाहती है, वह चाहती है कि उसका प्रेमी उसके साथ रहे, वह किसी भी ऋतु में प्रियतम से विछोह नहीं चाहती। इसलिए तीनों ऋतुओं में दोष दिखाकर चलने के आयोग्य बताती है-

सीपा ले तो सी पड़े, अन्याले लू बाय,
बरसा ले भुष चीकणी, चालन रूत न काय।

भावार्थ - शरद ऋतु में जाड़ा पड़ता है-गर्मी में लू बरसती है- वर्षा ऋतु में पृथ्वी चिकनी हो जाती है- अत: हे प्रियतम! परदेश जाने के लिए कोई भी ऋतु अच्छी नहीं है।

प्रियतम इतने पर भी नहीं मानता और वह जाने की हठ करता है, तब प्रेयसी भगवान से प्रार्थना करती है-

सावण सिकारां जावसी, नैणा मरसी रोय,
विधणा ऐसी रैन कर, भौर कदै ना होय।

भावार्थ- मेरा प्रियतम शिकार को चला जायेगा- ये मेरे नैन रो-रो कर बहेंगे, अत: हे भगवान। इस रात्रि को इतनी बड़ी कर दो कि कभी भोर हो ही नहीं।।

विरहणी के अश्रु भरे नैनों की ओर देखिए -

सजण सिधांया है सखी, उभी आंगण बीच नौणा चाल्या चौसरा, काजल माच्यो कीच।

भावार्थ - हे सखी ! मेरा प्रियतम परदेश चला गया है, मैं आंगन के बीच खड़ी हूँ - मेरी आंखों से पानी की अश्रु धारा बह निकली है और काजल का कीचड़ फैल गया है।

बिरही कहता है -

नाला नदियां सूं मिले, नदिया सरवर जाय,
बिरछां सू बेला मिले, ऐसी सहि न जाय।

भावार्थ- नाले जो हैं- वे नदियों से मिल रहे हैं- नदियां अपने प्रियतम सागर से मिलने जा रही है - लतायें वृक्षों से मुलाकात कर रही हैं। अत: यह मुझसे सहा नहीं जाता।

और फिर प्रियतम के आगमन पर-

हिवड़ो हेमागर भयो, तन पिंजरे ना माय।

तीज-त्यौहार के अवसर पर प्रेयसी अपने प्रियतम से कहती है-

धन धोरा जोरा घटा, लोरा बरसत लाय
बीज न मावै बादलों, रसिया तीज रमाय।

भावार्थ बादल जोरों से गरज रहे हैं, घटायें घिर रही हैं - वर्षा की झड़ी लगी हुई है- बीजली। बादलों के बीच समाती नहीं है - ऐसे सुहावने सावन के महीने में हे रसीले ! तीज का त्यौहार मना। श्रावण के महीने में अपने प्रियतम से बिछड़ी विरहणी अपने मन को व्यथा इन शब्दों में व्यक्त करती है।

आसी सावन मास,
बरसा रूत आत आसी बलै,
साईनारों साथ कदै, ना आसी बींझरा।

भावार्थ - बींझरा सावण का महीना तो फिर भी आयेगा, वर्षा ऋतु भी फिर आयेगी, लेकिन प्रियतम का साथ कभी नहीं होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने प्रियतम के विछोह को विरही प्रेयसी किस प्रकार अपने मनोभावों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करती है। आप भी नायिका के विरह वेदना की तड़पन को अनुभव करें।◆

पताः फैंसी बराजार, गुवाहाटी फोनः 9864918948

बदलावमुखी मारवाड़ी समाज

- किशोर कुमार जैन

युग के साथ–साथ मारवाड़ी समाज में काफी कुछ बदलाव आया है। व्यापार का तौर–तरीका बदल गया है। शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव आया है। सामाजिक रीति–रिवाज बदल गये हैं। हर क्षेत्र में आधुनिकता ने इस तरह पांव पसार लिए हैं कि मानों वे आज की जरूरत हों। उनके बिना जीवन में कुछ नहीं। संबंधों में भी एक ठहराव–सा महसूस किया जा रहा है। लोग अतीत को कुछ ज्यादा ही याद करने लगे हैं। हमारे जमाने में ऐसा था, वैसा था। पहली पीढी के लोगों की बातें मानों अब दुनिया का आठवां अजूबा हो। लेकिन अब करने–धरने को कुछ भी नहीं है। लोगों की दुनिया अब इडियट बॉक्स के सामने सिमटने लगी है। कुछ लोगों को तो उसी में संसार नजर आने लगा है। आधुनिकता के दौर में रंगे मारवाड़ी समाज की सोच भी अन्य भारतीय समाज से जुदा नहीं है।

व्यापारी समाज की अगर बात करें तो यह स्पष्ट तौर पर दिखायी देने लगा है कि अब गद्दी का जमाना नहीं रह गया है। गद्दी का स्थान आकर्षक काउंटरों ने ले लिया है। कंप्यूटर मशीनों में हिसाब–किताब बनने लगे हैं। लेकिन मानसिकता में बहुत कुछ बदलाव नहीं आया है। मनोरंजन के नाम पर कमोबेश एक ही स्थिति है। हां, धार्मिक आडम्बरता जो बढ़ती हुई नज़र आ रही है वह इस व्यापारी समाज में ही ज्यादा दिखायी दे रही है। शादी–ब्याह की तो परिभाषा ही बदल गयी है। पुराने रीति–रिवाजों को इतना आधुनिक बना दिया है कि शक होने लगा है कि क्या ये रिवाज परंपरागत थे। दूरदर्शन के धारावाहिकों का बहुत अधिक प्रभाव हमारे रीति–रिवाजों में देखा जा रहा है।

हम अगर अतीत देखें तो पाएंगे कि हमारा इतिहास एक गौरवोज्ज्वल इतिहास रहा है। लेकिन वर्तमान में हम सार्वजनिक होने की बजाय अंतर्मुखी व व्यावसायिक होते जा रहे हैं। जो संस्थाएं गरीबों के लिए काम कर रही हैं वह अब अमीर लोगों के ऊपर ध्यान देने लगी हैं। हमारा सारा कार्य प्रचार मुखी हो चला है। हर कार्य आडम्बरतापूर्ण और दिखावे के लिए होता जा रहा है। इसमें सबसे ज्यादा और बुरी तरह प्रभावी हुआ है तो वह मध्यमवर्गीय परिवार। शादी–विवाह के मामलों में ही देख लें, सादगी का तो कोई जमाना ही नहीं रहा।

फिजूल में धन की बर्बादी करना आन–बान–शान का विषय बनने लगा है। यह मानलें कि शादी–विवाह अगर व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न है तो फिर धार्मिक आयोजनों में इतना आडम्बर क्यों? यह कोई अनसुलझा सवाल नहीं है। लेकिन इस तरह के कार्यों में आवाज उठाने वाला समाज–विरोधी बन जाता है। आम आदमी तो चुप रहने में ही अपनी भलाई समझता है। समाज का युवा वर्ग (नयी पीढ़ी का) उसे तो समाज से कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा। वह तो अपनी मर्जी का खुद मालिक है। अपने पावों पर खड़ा होने वाला भला दूसरे की वैशाखी क्यों पकड़ेगा। वह पढ़–लिख कर इतना समझदार हो गया है कि अपने फैसलों में उसे किसी दूसरे की मोहर लगाने की जरूरत नहीं है। अब आज का युवा शादी की बजाय लिव–टुगेदर की भाषा सीख गया है। मन न मिलने पर तलाक की भाषा समझने लगा है। आने वाले समय में क्या हो सकता है उसकी कल्पना करना अपना मानसिक संतुलन खो देने के बराबर होगा। ऐसे में नैतिकता का सवाल ही कहां उठता है। फिर कहते हैं बच्चों में संस्कार नहीं है। टीवी दिखा–दिखा कर बच्चों को खाना खिलाती मां कैसे बच्चों को संस्कारित कर सकती है? बच्चे टीवी देख–देख कर इतना कुछ जानने लगे हैं कि वे बड़ों के कान ही कुतर दें। शायद इसीलिए कहा जाने लगा है कि आठ साल का बच्चा भी परिपक्व होने लगा है। ऐसे में नैतिकता की बातें, संस्कार की बातें भला उसको कैसे सुहाएगी। अगर कुछ ज्यादा ही संस्कारित करना चाहेंगे तो फिर उसे अनपढ़ ही रखना पड़ेगा या फिर किसी उस विद्यालय में पढ़वाना पड़ेगा, जिसमें कभी आपने शिक्षा ली थी। क्या यह विचार कभी आपके मन में आ सकता है? सामाजिक संरचना बदलने व संयुक्त परिवार के विघटन का बहुत बड़ा खामियाजा परिवार को भोगना पड़ता है। मसलन संबंधों की नाजुकता मिट जाती है। देने की प्रवृति कम होने और सिर्फ लेने की मानसिकता होने के कारण मानसिक असंतुलन के मामलों में बढ़ोत्तरी हो रही है। एक बार हम गहराई पूर्वक विचार करें तो पाएंगे कि संयुक्त परिवार की सामाजिक व्यवस्था में बहुत सदस्य होने के कारण व्यक्ति अकेला नहीं रहता था। वे सुख–दुख की बातों में सब मिलकर हिस्सा बांट लेते थे। मारवाड़ी समाज ने बहुत कुछ देखा है। एकता की भावना अब दो परिवार में ही नहीं है, तो फिर समाज में कैसे आएगी? समाज क्या है–व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज। देश और राष्ट्र की बात तो बाद में आती है।◆

मारवाड़ी सम्मेलन

और

असम साहित्य सभा

- गोपाल जालान

हाल ही में असम साहित्य सभा ने एक कार्यक्रम हाथ में लिया है, जिसके तहत असम के महान पुरुष स्व। ज्योतिप्रसाद अगरवाला की आदमकद मूर्तियां देश के विभिन्न स्थानों पर लगायी जाएंगी तथा देश भर में यह प्रचार किया जाएगा कि किस प्रकार राजस्थान से रोजगार की तलाश में असम आए एक परिवार ने असमिया जाति को नयी बुलंदियां प्रदान की। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अंग्रेजों के शासन काल में ही राजस्थान से आये केड़िया परिवार ने असम में न सिर्फ रोजगार के साधन जुटाये, बल्कि असमिया साहित्य, कला, संस्कृति को अपने महत् योगदान से लबरेज कर दिया। यह कितने गौरव की बात है कि इसी परिवार के स्व। ज्योतिप्रसाद अगरवाला को असमिया जाति का पुरोधा मानकर पूजा जाता है।

यह बात नहीं है कि विगत दो शताब्दियों में सिर्फ ज्योतिप्रसाद का परिवार ही राजस्थान से आकर असम में स्थायी रूप से रचा–बसा हो। ऐसे हजारों परिवार हैं, जो रोजगार की तलाश में असम आये तथा पूरी तरह यहां रच–बस गये। आज उनकी कई पीढ़ियां यहां गुजर चुकी हैं, लेकिन उनमें से ऐसे परिवार इने–गिने ही हैं, जिनको ज्योतिप्रसाद के परिवार सरीखा मान–सम्मान, प्यार हासिल हुआ हो। आखिर ज्योतिप्रसाद के परिवार में ही ऐसा क्या था कि आज हर असमिया उन्हें अपना मानता है, न सिर्फ अपना मानता है, बल्कि अपना पुरोधा मानकर पूजता भी है। आज भी समाज में प्रतिभावान व्यक्तियों की कमी नहीं है जो इस कार्य को आगे बढ़ा सकें। परंतु प्रश्न है समाज ने ऐसे व्यक्तियों को उजागर करने के लिए क्या किया। आज

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के १३ वें प्रांतीय अधिवेशन के अवसर पर मैं सम्मेलन के हर सदस्य से यह सवाल पूछना चाहता हूं कि आज जबकि आपको असम में आकर बसे दशकों बीत चुके हैं अथवा आपमें से काफी ऐसे हैं, जिनका जन्म ही असम में हुआ है, लेकिन आज भी उन्हें असम में वो सम्मान, प्यार प्राप्त नहीं है, जो ज्योतिप्रसाद अगरवाला के परिवार को दशकों पूर्व से प्राप्त है। आखिर ऐसा क्यों? क्या कभी आपने इसे गंभीरता से सोचा है? क्या कभी आपने इस मुद्दे पर गंभीरता से मनन, चिंतन किया है? क्या कभी आपने इसके कारणों को जानने की कोशिश की है?

असम में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच नामक दो स्थापित संगठन हैं, जिन्हें असम के मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधि संगठन माना जाता है। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन मारवाड़ी समाज के प्रबुद्ध व प्रतिष्ठित लोगों का संगठन माना जाता है। यह संगठन विगत कई दशकों से पूर्वोत्तर में अपनी गतिविधियां चला रहा है। मैं समझता हूं कि असम के मारवाड़ी समुदाय तथा स्थानीय असमिया के बीच की दूरी मिटाने के काम की सबसे अहम जिम्मेदारी पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन पर ही थी, लेकिन यह संगठन आज भी इस क्षेत्र में कोई ठोस काम कर पाया हो, मैं नहीं मानता। ऐसा नहीं है कि मारवाड़ी सम्मेलन के पास पैसों या साधनों की कमी हो। कमी है तो समाज में निष्ठावान समर्पित एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की, जो इसके महत्व को समझ कर आगे आएं और महसूस करें कि सिर्फ पद पर बैठने से ही समाज का कल्याण होना मुमकिन नहीं है।

जिस प्रकार मारवाड़ी सम्मेलन को मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधि संगठन माना जाता है, उसी भांति असम साहित्य सभा को असमिया समुदाय का सबसे अहम् संगठन माना जाता है। अचरज की बात है कि असम साहित्य सभा की तुलना में मारवाड़ी सम्मेलन के पास आर्थिक सबलता व साधनों की बहुतायत होने के बावजूद मारवाड़ी सम्मेलन साहित्य सभा की तुलना में नाममात्र ही काम कर पाता है। विशेषकर मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधि संगठन होने के नाते मारवाड़ी सम्मेलन को स्थानीय असमिया समुदाय के साथ सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में जिस प्रकार कंधे से कंधा मिलाकर काम करना था, उस दिशा में आज तक वह कोई ठोस काम नहीं कर पाया है। मारवाड़ी सम्मेलन को असम साहित्य सभा के साथ जिस प्रकार आपसी ताल–मेल, सहयोग व भाईचारे की भावना से काम कर दोनों समुदायों के बीच की दूरियों को पाटने का प्रयास करना था, मारवाड़ी सम्मेलन इस दिशा में बड़ी–बड़ी बातें करने के अलावा

आज तक कोई ठोस काम नहीं कर पाया है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मारवाड़ी सम्मेलन हिप्टोनाइज्ड होकर अपनी ताकत को भुला चुका है। मेरी समझ में मारवाड़ी सम्मेलन किसी भी मायने में असम साहित्य सभा से कमजोर नहीं है। लेकिन अगर वह अपनी ताकत के अनुरूप काम नहीं कर पाया है तो उसके लिए और कोई जिम्मेदार नहीं, बल्कि खुद सम्मेलन के रणनीतिकार व पदाधिकारी ही जिम्मेदार हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन को स्थानीय समुदायों के साथ मारवाड़ी समुदाय के मधुर रिश्ते कायम करने के लिए विशेष भूमिका का निर्वाह करना लाजमी था, लेकिन सम्मेलन ने कभी इस दिशा में ठोस काम करना तो दूर, कभी सोचा–विचारा भी हो, मुझे ऐसा नहीं लगता। सम्मेलन के पदाधिकारी असम साहित्य सभा के साथ मेल–जोल बढ़ाकर, मिल–जुलकर कार्य करते तो आज असम में मारवाड़ी समाज को जो सम्मान व प्यार मिलता उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। असम साहित्य सभा असम के जन–जन का संगठन है। मारवाड़ी सम्मेलन अगर साहित्य सभा के साथ आंतरिकता से जुड़ता तो मैं समझता हूं कि वह असम के जन–जन से जुड़ने में भी सफल हो जाता। इसका असम के कोने–कोने में बसे समूचे मारवाड़ी समुदाय को फायदा मिलता। उनकी न सिर्फ स्थानीय लोगों से आंतरिकता बढती, अपितु आपसी मेल–जोल भी बढ़ता। फलस्वरूप आज असम में ज्योतिप्रसाद के परिवार को जो प्यार व सम्मान हासिल है, असम के समूचे मारवाड़ी समुदाय को भी उतना ही प्यार, सम्मान हासिल होता। अत: असम के मारवाड़ी समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन व पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच को इस दिशा में न सिर्फ गहराई से चिंतन–मनन करना होगा अपितु ठोस कार्य भी हाथ में लेना होगा। तभी असम में रहनेवाले मारवाड़ियों का स्थानीय समुदायों से हृदय की गहराइयों तक अपनत्व की भावना व्याप्त हो पाएगी। अत: पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के १३वें प्रांतीय अधिवेशन के अवसर पर मैं सम्मेलन के हर सदस्य से यह विनती करना चाहता हूं कि वे अब भी अपना नजरिया बदलें तथा स्थानीय समुदाय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने की दिशा में ठोस कदम बढाएं, तभी उनकी स्थानीय समुदायों से समरसता कायम होगी और वे स्थानीय समुदायों की ही तरह सुख, चैन, अपनत्व, भाईचारे के साथ जीवन–यापन करने में सफल हो पाएंगे। आशा है अधिवेशन के अवसर पर पधारे सभी पदाधिकारी व सदस्य मेरी बात को गहराई से लेंगे तथा मेरी भावनाओं को समझकर इस दिशा में ठोस कार्य करने की पहल करेंगे।◆

कविता :

भीड़ में कोई आदमी नहीं था

किसी बेचारे का एक्सीडेंट हो गया
कार तो भाग ही गई,
लोगों को भी नहीं आई दया।
खून से लथपथ वह पड़ा था सड़क पर
कोई पास के
अस्पताल नहीं ले जा रहा था
क्योंकि पुलिस का था डर।
सवालों का जवाब देना होगा
कैसे हुआ किसने देखा कहना होगा
थाना भी जाना होगा,
कोर्ट में देनी होगी गवाही
इस तरह घसीटा जाना पड़ेगा,
क्यों लें ऐसी वाह वाही।
समय बीत गया, बेचारा ढेर हो गया
किसी नवयुवती का सिन्दूर,
नन्हें बच्चों की आशा
चिर निद्रा में सो गया।
घर में कोहराम मच गया,
मातम छा गया
हंसी खुशी भरे जीवन को
काल–चक्र खा गया।
आने जाने वाले सान्त्वना दे रहे थे
पूछ पूछ कर घटना का
जायजा ले रहे थे।
एक औरत अफसोस जता रही थी
कह रही थी व्यस्त सड़क थी,
भीड़ तो बहुत थी
फिर पड़ा क्यों रहा
अस्पताल भी पास में वहीं था।
मैंने कहा–भीड़ तो बहुत थी,
अस्पताल भी पास में वहीं था
पर भीड़ में कोई आदमी नहीं था।

— बनेचन्द मालू, कोलकाता

युगपथ चरण :

मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

रंग रंगीलो राजस्थान महोत्सव सम्पन्न

जबलपुर, दिनांक १९.१२.२००९ : भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में रंग रंगीलो राजस्थान महोत्सव का पाँच दिवसीय आयोजन अत्यन्त उत्साहजनक वातावरण में सम्पन्न हुआ। मध्यप्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन एवं म.प्र. पूर्व क्षेत्रीय प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मेले का शुभारंभ दिनांक १९.१२.२००९ शुक्रवार को मेले प्रांगण में स्थापित मन्दिर में प्रातः ग्यारह बजे सर्वश्री कैलाश गुप्ता, कैलाश अग्रवाल, पुरूषोत्तम संघी, गणेश पुरोहित, रमेश गर्ग, श्रीमती मंगला काबरा श्रीमती निर्मला माहेश्वरी, श्रीमती सीमा राठी, कमलेश नोहटा, सन्तोष ओसवाल, अमित टीबड़ेवाला एवं मदन गोपाल जेठा सहित अनेक गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति में प्रारंभ किया गया। रात्रि ८ बजे उद्घाटन समारोह नव–निर्वाचित महापौर श्री प्रभात साहू के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ, इस पांच दिवसीय मेले में राजस्थानी 'मारवाड़ी' परम्परानुसार खान पान, साज सज्जा, कपड़े, ज्वेलरी इत्यादि स्टालों के अतिरिक्त राजस्थान से पधारे 'मुकेश आचार्य' के नेतृत्व में आई १४ सदस्यीय पार्टी ने दिल को दहला देने वाले हैरत अंगेज करतब दिखाकर नगर की जनता को मंत्र मुग्ध कर दिया। मेले में देश के विभिन्न शहरों से आये व्यापारियों ने लगभग ८० स्टालों के माध्यम से मारवाड़ी रीति रिवाज व परम्परा इत्यादि का प्रदर्शन किया। पाँच दिवसीय आयोजन में ऊँट, घोड़े, बैलगाड़ी इत्यादि की सवारी के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के गेम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

मेले में विशेष रूप से पूर्व महापौर श्री विश्वनाथ दुबे, विधायक लखन धनघोरिया, विधायक शरद जैन, भारतीय जीवन बीमा निगम के एस.डी.एम. सुभाष जिन्दल, मुकुन्ददास माहेश्वरी इत्यादी की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

दि.२३.१२.२००९ बुधवार को म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष श्री ईश्वरदास रोहाणी के विशिष्ट आतिथ्य में मेले का समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष डॉ. कैलाश गुप्ता, महामंत्री रमेश गर्ग कोषाध्यक्ष सन्तोष ओसवाल ने मेले के सफल आयोजन हेतु सभी सदस्यों, नगरवासियों, शासन, प्रशासन, पत्रकारों इत्यादि का आभार व्यक्त किया।◆

राज्यपाल ने दी विद्यार्थियों को नेक सलाह

कोलकाता। राज्यपाल श्री गोपाल कृष्ण गाँधी ने मामराज अग्रवाल फाउण्डेसन द्वारा आयोजित १२ वें मामराज अग्रवाल राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मान समारोह के उद्घाटन अवसर पर मेधावी विद्यार्थियों को आगाह किया कि वे अपने शिक्षण संस्थानों की सम्पत्ति की सुरक्षा का नैतिक ख्याल रखें और उसे एक पवित्र स्थल समझें तथा अपने अध्यापकों एवं अभिभावकों के प्रति सम्मान का भाव रखें। राज्यपाल ने श्री मामराज अग्रवाल को सफल अर्थोपार्जन के साथ–साथ सेवामूलक कार्यो का प्रेरणास्त्रोत बताया। आयोजन में विभिन्न परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त ९७ मेधावी छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र तथा प्रत्येक को पांच–पांच हजार की नकद राशि प्रदान की गई।

मारवाड़ी युवा मंच, कोलकाता शाखा

समाज को सेवाएं देने वाली विभूतियां सम्मानित

मारवाड़ी समाज की तस्वीर बदलने में मंच की भूमिका

– श्री सीताराम शर्मा

कोलकाता, ३ जनवरी २०१० स्थानीय ज्ञान मंच सभागार में समाज के विकास के साथ अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले व्यक्तियों को अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की ओर से सम्मानित किया गया। रविवार को मंच का रजत जयंती समारोह और मारवाड़ी युवा मंच की कोलकाता शाखा का २२वां वार्षिक समारोह मनाया गया और विशिष्ठ व्यक्तियों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता **जुगल किशोर जैथलिया** और **डॉ. शारदा फतेहपुरिया** को ***सामाजिक सम्मान,*** विधायक **दिनेश बजाज** और पत्रकार **प्रकाश चण्डालिया** को ***युवा सम्मान,*** अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **प्रमोद शाह** को ***मंच आइकॉन सम्मान*** और ***आर्यिका सुपार्श्वमती स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव समिति*** को **सामाजिक संस्था सम्मान** दिया गया। **डॉ. शारदा फतेहपुरिया** ने विकलांगों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को बदलने को जरूरत बतायी। उन्होंने कहा कि देश में लगभग ८ प्रतिशत विकलांग है और उन्हें पृथक कर देश आगे नहीं बढ़ सकता। कार्यक्रम को उद्घाटन उद्योगपति सूर्य प्रकाश बागला ने किया, वहीं अतिथि के रूप में मंच के संस्थापक राष्ट्रीय अध यक्ष प्रमोद सर्राफ, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के

सामाजिक सम्मान

मंच आइकॉन सम्मान

युवा सम्मान

मंच सम्मान

श्री नरेश अग्रवाल, श्री संतोष कानोडिया एवम् श्री महेश साह

हवड़ा शाखा

कोलकाता शाखा

उत्तर मध्य कोलकाता शाखा

रिसड़ा शाखा

कौस्तुभ जयंती के चेयरमैन सीताराम शर्मा, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया, समाजसेवी राजेन्द्र खण्डेलवाल, मंच के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री संजय शर्मा उपस्थित थे। इस अवसर पर मंच के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री प्रमोद्ध सराफ** ने कहा मारवाड़ी युवा मंच ***'समाज सुधार'*** के क्षेत्र को व्यापक दृष्टि से देखता है। मंच का गठन समाज की विभिन्न समस्याओं को देखते हुए हुआ है, जिसमें ***'समाज सुधार'*** भी एक पक्ष है। समारोह के विशिष्ट अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा मारवाड़ी समाज देश के कोने-कोने में बसा हुआ है एवं सेवा कार्यों को देश के हर हिस्सों में पंहुचाने में युवामंच ने बहुत बड़ा कार्य किया है। मारवाड़ी समाज की तस्वीर बदलने में भी मंच की भूमिका को नाकारा नहीं जा सकता। **श्री जुगल किशोर जैथलिया** ने समाज की बदलती संस्कृति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए युवाओं का आह्वान किया कि युवावर्ग को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। **श्री प्रकाश चण्डालिया** ने हिन्दी पत्रकारिता को समाज सम्मान के नजरों से देखने का निवेदन किया। वहीं **श्री दिनेश बजाज** ने कहा कि अपनो के बीच सम्मान पाना मेरे लिए गर्व का विषय है। इस अवसर पर शाखा मुखपत्र ***'उद्घोष'*** का विमोचन भी किया गया। साथ ही कोलकाता क्षेत्र के सभी शाखा के वर्तमान सहित पूर्व अध्यक्षों को भी ***''मंच सम्मान''*** के रूप में मंच के प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया। इस अवसर पर ***''कन्या भ्रूण''*** पर आधारित एक नृत्य नाटिका ***''माँ! मेरी आवाज सुनो''*** का भी मंचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री विमल कुमार चौधरी ने किया एवं श्री शम्भु चौधरी, श्री सज्जन बेरीवाल, श्री प्रवीण सराफ, श्री अनूप अग्रवाल, श्री प्रकाश चंद्र सराफ आदि सदस्यों ने सक्रिय हिस्सा लिया।◆

श्री अग्रसेन जयन्ती समारोह

श्री अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा मेधावी अग्रवाल छात्र-छात्राओं को सम्मानित

कोलकाता २० सितम्बर २००९। अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा मनाये जा रहे इस समारोह में प्रधान अतिथि श्री पवन कुमारजी कानोड़िया ने अग्रकुल प्रवर्तक महाराज श्री अग्रसेनजी को माल्यार्पण किया एवं श्री श्यामलाल जालान ने श्री अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा प्रतिपादित हो रहे विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक गतिविधियों से सबको परिचित कराते हुए महाराज श्री अग्रसेन जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

इसी क्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्तुत्य अवदानों के लिए सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री हरी प्रसाद कानोड़िया एवं श्री साधुराम बंसल को उत्तरीय वस्त्र, श्रीफल, सम्मान पत्र एवं भवन का प्रतीकचिन्ह भेंट करते हुए उन्हें समाज रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री अग्रसेन स्मृति भवन द्वारा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा में पश्चिम बंगाल में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले मेधावी अग्रवाल छात्र–छात्राओं को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के लिए स्वर्ण एवं रजत पदक से सम्मानित करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन भवन के संयुक्त मंत्री एवं संयोजक श्री सत्यनारायण जी फतेहपुरिया ने किया और सहसंयोजक श्री प्रभुदयाल केसान थे।◆

प.बंग मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

द्वारा हजारों बच्चों को ड्रेस प्रदान

महानगर की सुप्रसिद्ध संस्था प.बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष द्वारा जयगोपालपुर (थाना– बसन्ती), सुन्दरवन में ३१ स्कूलों के चार हजार छात्र–छात्राओं में परिधान का वितरण किया गया। कोलकाता से लगभग १२० कि.मी. दूर सुदूर इलाके में आदिवासी एस.पी. स्कूल के प्रांगण में दोपहर को हजारों लोगों की उपस्थिति में राज्य के सिंचाई मंत्री श्री सुभाष नस्कर ने कहा कि सुन्दरवन इलाके में लोगों को बाघ और गरीबी दोनों के साथ लड़ना पड़ता है। यहां अशिक्षा के कारण गरीबों का जीवन और कष्टप्रद है लेकिन अभी सरकार खुबजोर प्रयास कर रही है कि स्थिति बदले। यह काम सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं हो सकता। सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों को आगे आना चाहिये। श्री नस्कर ने सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री साधुराम बंसल द्वारा प्रदत्त एक एम्बुलेंस का भी लोकार्पण किया। श्री नस्कर ने कहा कि चिकित्सा केन्द्र यहां से दूर है अत: एम्बुलेंस एक बड़ी जरूरत को पूरा करेगी। श्री नारायण प्रसाद डालमिया ने बच्चों के बीच परिधान के साथ मिठाई आदि का भी वितरण किया। संस्था के सचिव श्री बाबूलाल अगरवाल ने बताया कि शिक्षा कोष प्रति वर्ष चार सौ छात्रों को फीस प्रदान करता है। अब तक दस हजार छात्र–छात्राओं को स्कूली परिधान भी शिक्षा कोष के माध्यम से दिये जा चुके हैं। सर्वश्री विश्वम्भर नेवर, घनश्याम शर्मा, बंशीलाल बाहेती, काशीनाथ झुनझुनवाला, प्रमोद अग्रवाल, मांगीराम खरकिया, आदित्य किल्ला, के के लोहिया, सुरेश अग्रवाल, विश्वजीत के साथ सहयोगी संस्था राजस्थानी महिला संगठन की ओर से श्रीमती मधु शर्मा, श्रीमती पुष्पा गोयनका, श्रीमती सरोज शाह, श्रीमती सुमित्रा पारीक, सुश्री बेला मोहता, आदि ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।◆

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर टांटिया का शतवार्षिकी उत्सव

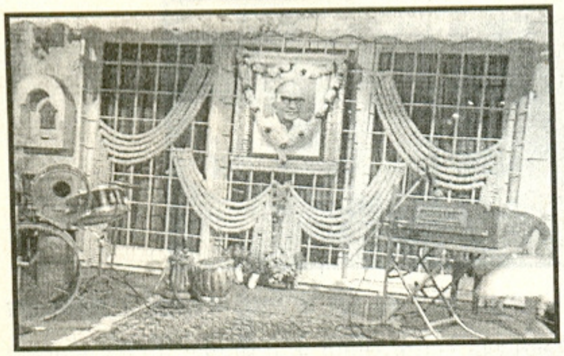

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १९६६ में पूना में आयोजित अधिवेशन में निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय रामेश्वर टांटिया के १००वें जन्म दिवस (२६ जनवरी २०१०) के अवसर पर उनके सुपुत्र श्री नन्दलाल टांटिया ने कोलकाता स्थित अपने निवास स्थान पर शतवार्षिकी उत्सव का आयोजन किया। वक्ताओं ने स्व. टांटिया के जीवन पर प्रकाश डालते हुए संस्मरण रखे। साहित्य महोपाध्याय श्री नथमल केडिया का सम्मान भी किया गया, जो रामेश्वरजी के पुराने साथी रहे हैं। इस अवसर पर विश्वमित्र के संपादक श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल, सम्मेलन के पूर्व सभापति श्री सीताराम शर्मा, पूर्व उपसभापति श्री रतन शाह सहित बड़ी संख्या में समाज के सम्मानित लोग उपस्थित थे। ◆

शिवसागर शाखा का चुनाव

१५ मई २००९ को पूर्वोत्तर प्रादेशिय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर शाखा (असम) की कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसके प्रसार कार्यों के मांगों की तालिका निम्नलिखित है।

वर्तमान अध्यक्ष – श्री सत्यनारायण दाधीच, कार्यकारिणी अध्यक्ष श्री मुरलीधर साहेवाला, मंत्री श्री विजयकुमार चित्तावत, कोषाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल चुने गये।◆

नागौर शाखा का चुनाव

मारवाड़ी सम्मेलन, नवगांव शाखा की एक साधारण सभा रविवार दिनांक २५ अक्टूबर २००९ को श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा भवन में आयोजित हुई। उक्त सभा में सर्वसम्मति से दो वर्ष हेतु २५ अक्टूबर २००९ से नई कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। जिसके पदाधिकारी निम्नलिखित हैं।

अध्यक्ष – श्री बजरंगलाल अग्रवाल (अधिवक्ता), उपाध्यक्ष – श्री माणकचन्द नाहटा, श्री जुगल किशोर जाजोदिया, श्री अनिल शर्मा, मंत्री – श्री संजय कुमार मित्तल, सहमंत्री – श्री ललित कोठारी, कोषाध्यक्ष – श्री रघुवीर प्रसाद आलमपुरिया चुने गये।◆

जूनागढ़ शाखा में रक्तदान शिविर

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की जूनागढ़ शाखा के नेतृत्व में १६ नवम्बर २००९ को चमेली देवी महिला महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष श्री गोपाल मित्तल थे। इस शिविर में २५ आदमियों ने रक्तदान किया।◆

भजन गायक श्री राजेंद्र जैन सम्मानित

कोलकाता: प्रख्यात भजन गायक राजेंद्र जैन के मंच साधना के पचास वर्ष पूरे होने पर बुधवार को कलांजलि परिवार ने उन्हें सम्मानित किया। महानगर सहित देश के विभिन्न राज्यों से आये श्री जैन के प्रशंसकों ने समारोह में उपस्थिति दर्ज करायी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इमामी ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के राधेश्याम अग्रवाल ने पचास वर्षो से संगीत के क्षेत्र में सक्रिय श्री जैन के सांस्कृतिक योगदान की सराहना की। महानगर सहित अन्य राज्यों से आये संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने श्री जैन को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। ◆

सभी सदस्यों के सूचनार्थ

1. बिना कच्ची रसीद प्राप्त किये किसी भी प्रचारक को नगद राशि का भुगतान न करें।

2. तीन माह में सम्मेलन कार्यालय के द्वारा पक्की रसीद न मिले तो हमें इसकी जानकारी जरुर से देवें।

– महामंत्री

सेवा कृपा नहीं, कर्तव्य है

- राजश्री बिरला

प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह यथा संभव समाज सेवा करे, राष्ट्रीय गौरव की रक्षा के लिए भामाशाह ने सर्वस्व दान दिया था। मेरी दृष्टि में वही दान श्रेष्ठ है, जिसमें अहंकार न हो, ये बातें भामाशाह स्मारक समिति के तत्वावधान में दसवें भामाशाह सेवा सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए समाजसेविका पद्मा बिन्नानी ने ज्ञान मंच सभागार में कही समारोह में समिति ने समाजसेविका राजश्री बिरला, अमला रुईया, मिरनालीनी साराभाई (अनुपस्थित), समाजसेवी हरिमोहन बांगड़ को भामाशाह सेवा सम्मान से सम्मानित किया। सम्मान के रूप में उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल व स्मृति चिन्ह दिया गया। इस अवसर पर राजश्री बिरला ने कहा कि आज इस अवार्ड को विनम्रता के साथ स्वीकार करती हूँ पर इसके लिए मैं अपने को योग्य नहीं समझती। पर इससे आदित्य बिरला ग्रुप के कर्मचारियों को सामाजिक कार्यों को करने के लिए प्रेरणा मिलेगी। धन्य है भामाशाह, जिन्होंने दान देकर देश और समाज के गौरव को बढ़ाया। समाज सेवा करके हम किसी पर कृपा नहीं करते, हम सिर्फ अपना कर्तव्य करते हैं। इश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वह सामाजिक दायित्व को पूरा करने में कृपा करें। अमला रुईया ने कहा कि ये पुरस्कार वास्तव में ग्रामीण भाइयों की कड़ी मेहनत और उनकी ईमानदारी का है। हमारा सपना है – प्रत्येक गांव में पेय जल की सुविधा हो। किसी को रोटी की कमी न हो। समारोह का उद्घाटन उद्योगपति बसंत कुमार बिरला ने किया। सम्मानित अतिथि डॉ. सरला बिरला ने भगवान गणेश को पुष्प अर्पित किए। पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल व न्यायाधीश श्यामल कुमार सेन ने स्मारिका का लोकार्पण किया। श्री सेन ने कहा कि हमारा दायित्व है कि जो समाजसेवा करते हैं, उन्हें हम सम्मानित करें। नीचे तबके के लोगों को आगे बढने का समान अवसर देना चाहिए। स्वागत भाषण सीताराम शर्मा ने दिया। कार्यक्रम का संचालन महावीर प्रसाद रावत ने किया। समिति के अध्यक्ष बेगुगोपाल बांगड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।◆

हर क्षेत्र में मजबूत हो समाज की पकड़

- रुँगटा

रामगढ़, मारवाड़ी समाज खुद को सिर्फ व्यवसाय तक सीमित करके रखे हुए है। जिसके कारण चारों ओर से इस समाज के लोगों का दोहन किया जा रहा है। इससे बचने के लिए समाज को अपनी शक्ति पहचाननी होगी। स्थानीय मारवाड़ी धर्मशाला में आयोजित अभिनन्दन समारोह को संबोधित करते हुए उक्त बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा ने कही। उन्होंने समाज के लोगों से एकजुट होकर समाज के विकास के लिए काम करने का आह्वान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि धीरे–धीरे मारवाड़ी समाज भी जागृत हो रहा है। व्यवसाय के साथ समाज के लोगों की पकड़ दूसरे क्षेत्र में भी बढ़ रही है। जिससे समाज पूरे राष्ट्र में मजबूत हो रहा है। इसे और मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके लिए समाज के लोगों को एकजुट होना होगा। समारोह को श्री रुँगटा के अलावा रामगढ़ जिला मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री नानू राम गोयल, मारवाड़ी महिला मंच की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा अरुणा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गोविन्द मेवाड़, बसंत मित्तल, पूर्व विधायक जमुना प्रसाद शर्मा, शंकर चौधरी, श्याम परशुरामपुरिया, सुरेश पी अग्रवाल आदि ने भी संबोधित किया। वहीं कार्यक्रम में महेश पटवारी, नरेश अग्रवाल, बजरंग लाल, विवेक अग्रवाल, भीम अग्रवाल समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।◆

मारवाड़ी महिला मंच, लखीमपुर

दो दिवसीय रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

२४–२५ अक्टूबर को दीपावली मिलन समारोह सौउल्लास सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला मंच व मारवाड़ी युवा मंच के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय मंच भवन में हुआ। दिनांक २५ अक्टूबर को पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर जी हरलालका व अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला मंच की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल द्वारा दीप प्रज्वलन करवा कर एक विशेष सभा का प्रारम्भ किया गया। इस अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष बलबीर प्रसाद जी शर्मा, मारवाड़ी महिला मंच की अध्यक्षा सरोज गिड़िया, पूर्वाध्यक्षा श्रीमती लीला पटवारी, पूर्वाध्यक्षा श्रीमती पिस्ता जैन व जैन युवा मंच के अध्यक्ष श्री गोविन्द तापड़िया भी मंच पर उपस्थित थे। सभा का संचालन मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव श्री हीरालाल जैन ने किया। श्री इन्दरचन्द जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के नृत्य पेश कर बच्चों ने सभी का मन जीत लिया। वहीं कार्यक्रम की संचालिका अनु बजाज व राधिका मालपानी ने भी सुमधुर अंदाज में कार्यक्रम का संचालन किया।

पहले दिन २४ अक्टूबर को महिलाओं व बच्चों द्वारा पूरे भारतवर्ष की झलक लिए विभिन्न प्रान्तों के नृत्य प्रस्तुत किये गये। छोटे–छोटे बच्चों के लिए आयोजित बेबी फैशन शो में कुल १५ बच्चों ने भाग लिया। श्रेणी क में इसिका जैन प्रथम व कृष्णा तापड़िया द्वितीय रहें, श्रेणी ख में संस्कृति तापड़िया प्रथम व रिद्धि नाहटा एवं मधुरिका अग्रवाल संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर रहें। कार्यक्रम का संचालन सुप्रिया अग्रवाल व नीलम जैन ने किया। इस आशय की जानकारी महिला मंच की सहसचिव श्रीमती उर्मिला दिनोदिया द्वारा दी गई। इस अवसर पर महिला मंच की स्मारिका स्मृति का विमोचन किया गया, जिसका सम्पादन श्रीमती सरोज गिड़िया ने किया। ◆

सूचना

सदस्यों की डायरेक्टरी 31 मार्च 2010 तक प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिन सदस्यों ने अभी तक अपना फार्म नहीं जमा दिया हो, से पुनः अनुरोध है कि वे अपना फार्म जल्द से जल्द जमा कराने की कृपा करें।

– *रविन्द्र कुमार लड़िया, संयोजक*

श्रद्धांजलि

लाल सलामः ज्योति बाबू को

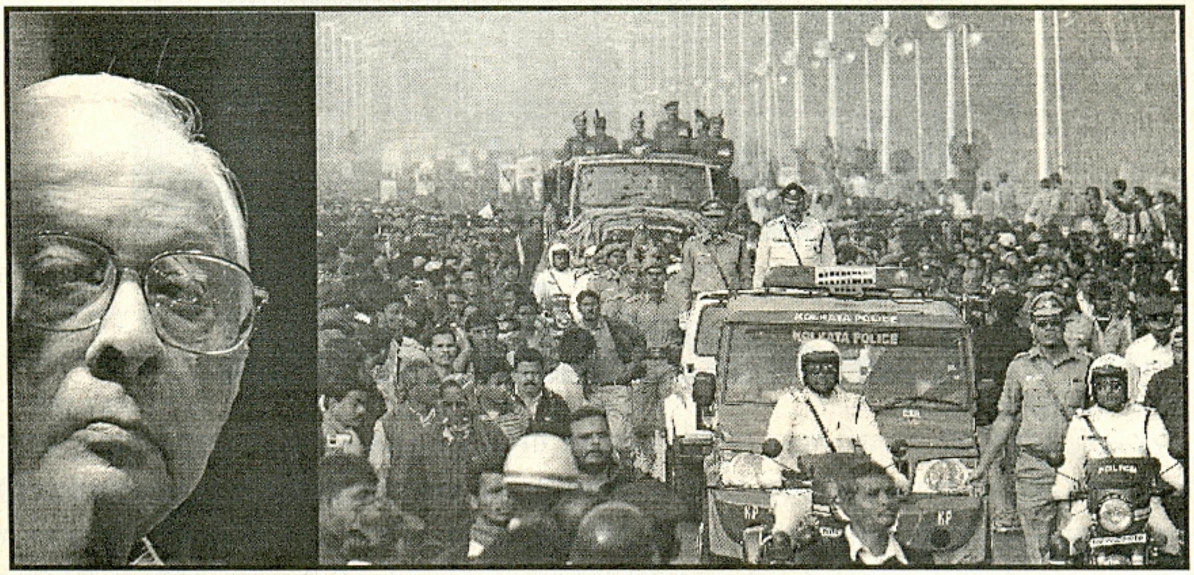

कोलकाता में ४३/१ महात्मा गांधी रोड स्थित आवास में आठ जुलाई १९१४ को जन्म लेने वाले बंगाल के महानायक श्री ज्योति बसु का कोलकाता में दिनांक १७ जनवरी २०१० को निधन हो गया। आपने लगातार २३ वर्षों तक बंगाल के मुख्यमंत्री पद पर रहकर एक इतिहास रच डाला। लोगों की इच्छा तो यह थी कि आप २५ वर्षों तक का कार्यकाल पूरा करते, परन्तु अपने स्वास्थ्य को देखते हुए आपने सक्रिय राजनीति से सन्यास लेना जरूरी समझा।

बंगाल के मुख्यमंत्री के रूप में १९७७ से २००० तक उन्होंने काम किया, मुख्यमंत्री के रूप में यह देश भर का सबसे लंबा रिकार्ड है। इनके पिता का नाम निशिकांत बसु था। वे ढ़ाका के बरोदी गांव के थे। पेशे से वे एक डॉक्टर थे। इनकी माता का नाम हेमलता बसु था। १९५३ में प्रेसिडेंसी कॉलेज से कला संकाय में ऑनर्स डिग्री हासिल की। उसके बाद वे लंदन से कानून की डिग्री हासिल कर वे १९४० में लौटे। उसके बाद वे कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया के होल टाइमर (पूर्णकालिक कार्यकर्ता) बने। १९४४ में श्री बसु पूरी तरह से ट्रेड यूनियन के कार्य कलापों से जुड़ गये। सीपीआइ ने उन्हें रेलवे में श्रमिकों को जोड़ने का काम दिया। जब बीएन रेलवे वर्कर्स यूनियन व बीडी रेल रोड वर्कर्स यूनियन का विलय हुआ, तो वे इसके महासचिव बनाये गये। २० जनवरी १९४० को इनका विवाह बंसती (छवि) घोष से हुआ। लेकिन ११ मई १९४२ को इनकी पत्नी का देहांत हो गया। इसका असर इनकी माता पर इतना गहरा पड़ा कि एक महीने बाद ही इनकी माता का निधन हो गया। पांच दिसंबर १९४८ को इन्होंने कमल बसु के साथ दूसरा विवाह रचाया। १९५२ में इनके बेटे चंदन बसु का जन्म हुआ।

राजनितिक सफर :

श्री बसु १९४६ में पहली बार बंगाल विधनसभा के लिए चुने गये। १९६४ में जब कम्युनिस्ट पार्टी बंट गयी तो श्री बसु कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्ससिस्ट) के नौ सदस्यीय पोलित ब्यूरो के सदस्य बने। सीटू के गठन के बाद वे बंगाल इकाई के उपाध्यक्ष बनाये गये। १९६७ व १९६९ में यूनाइटेड लेफ्ट फ्रंट सरकार में उप मुख्यमंत्री बनाये गये। इन्हें वित्त व परिवहन विभाग का प्रभार भी दिया गया था। दूसरी बार इन्हें पुलिस व गृह विभाग भी दिये गये। पहली बार २१ जून १९७७ को वे बंगाल के मुख्यमंत्री बने। तत्पश्चात छह नवंबर २००० तक लगातार इस पद पर बने रहे। १९९६ में परिस्थितिवश उन्हें प्रधानमंत्री बनने का एक मौका मिला तो जरूर, पर पार्टी ने ही उन्हें प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया। इसके बावजूद वे केंद्रीय कमेटी के सदस्य बने रहे। लेकिन पोलित ब्यूरो के स्पेशल इनवाइटी के रूप में उन्हें बनाये रखा गया। ज्योति बसु की विभिन्न विषयों पर लिखने में भी रुचि थी। पार्टी मुखपत्रों के लिए नियमित लेख आदि लिखते रहते थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित।◆

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, January 2010
RNI Regd. No. 2868/68

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

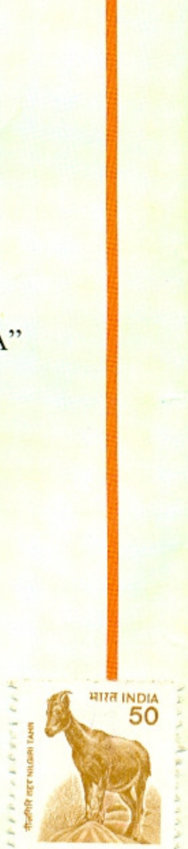

SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com